नल-दमयन्ती

सन्तराम वत्स्य

नल-दमयन्ती

आर्य प्रकाशन मण्डल
गांधी नगर, दिल्ली-110031

नेल कमयनी

सन्तराम वत्स्य

© प्रकाशक

प्रकाशक

आर्य प्रकाशन मण्डल
IX/221, सरस्वती भंडार, गांधी नगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण

1988

मूल्य

पच्चीस रुपये

मुद्रक

चोपड़ा प्रिंटर्स, मोहन पार्क
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

NAL-DAMYANTI (Hindi Novel)
by Santram Vatsya
Price : Rs. 25.00

दो शब्द

जुए में हारे हुए पाण्डव बारह वर्ष का वनवास-दुःख भोग रहे थे। वीर अर्जुन शस्त्रास्त्रों की प्राप्ति के लिए तप करने हिमालय की ऊंचाइयों पर जा चुका था।

अपमान की आग से जलते भीमसेन ने एक दिन धर्मराज युधिष्ठिर से कहा, "भैया! आपके जुआ खेलने की बुरी लत के कारण, हम लोग पुरुषार्थी होकर भी दीन-हीन जैसे हो गए हैं। जुए के इस खेल में फंसकर आपने ऐसा अनर्थ कर डाला कि हम कहीं के न रहे।

"एक बार फंसे, दुबारा फिर फंसे और मुझे लगता है कि वे दुष्ट आपका फिर खेलने के लिए बुलाएंगे तो आप तीसरी बार भी फंस जाएंगे।"

युधिष्ठिर भीमसेन को समझा-बुझाकर शान्त करने का प्रयत्न कर ही रहे थे कि महर्षि बृहदश्व वहां आ पहुंचे। दुखी युधिष्ठिर ने महर्षि का सत्कार करने के बाद अपना दुखड़ा सुनाया। वे बोले, "मेरे दुखी सम्बन्धियों ने मेरी इस आदत के कारण मुझे जो तीखी और कड़वी बातें कही हैं, उनके कारण मुझे रात को नींद भी नहीं आती। इस जुए में हम कैसे ठगे गए, हमारा कैसा अपमान हुआ, भरी सभा में द्रौपदी को केशों से पकड़कर खींचा गया और फिर मिला लम्बा वनवास। मैं

नहीं होगा।"

उस समय महर्षि वृहदश्व ने युधिष्ठिर को 'नल-दमयन्ती' की कहानी सुनाई थी।

'नल-दमयन्ती' की कहानी हमारे इतिहास-पुराण की अमर कथा है। यह कथा है आदर्श पतिव्रत और पत्नीव्रत की। यह कथा है, जुए के भयंकर परिणाम की। यह कथा इस बात की गवाह है कि बुरी आदतें मनुष्य को अपने पंजे में जकड़कर कैसा विवश कर देती हैं! यह कथा हमें शिक्षा देती है और हमें सावधान करती है कि जुआ कितना बुरा खेल है। यह राजा को भी भिखारी बना देता है।

'महाभारत' की लड़ाई की जड़ में यह जुआ ही था, यह सभी जानते हैं। आज भी यह बुरा खेल कितने ही घरों को उजाड़ रहा है, कितनी पत्नियों और बच्चों के मुंह की रोटी छीन लेता है, तन पर कपड़ा भी नहीं छोड़ता। बीमारी, कलह और दरिद्रता तीनों इसकी संगिनी हैं। हम इससे दूर रहें, तो इन तीनों से भी बच सकते हैं।

रात-रात में अमीर बन जाने का पापी लोभ ही जुए का पिता है। हम मेहनत से जीना सीखें, तो इस दुष्ट की एक भी चाल कभी सफल न हो और इस बुराई से पिंड छूटे।

—सन्तराम वत्स्य

निषध देश में वीरसेन नाम का एक प्रसिद्ध राजा था। उसके पुत्र का नाम 'नल' था। पिता की मृत्यु के बाद निषध देश की राजगद्दी पर नल बैठा।

नल के गुणों का क्या ठिकाना ! वह धर्म और राजनीति का जानकार था। रूप-यौवन में भी उस समय उस जैसा दूसरा कोई नहीं था। अच्छे घोड़ों के पहचानने और उन्हें तेज दौड़ाने में भी नल की बराबरी करने वाला कोई नहीं था।

बड़ी सेना थी नल के पास। पास-पड़ोस के किसी भी राजा को नल के साथ युद्ध करने का साहस नहीं होता था। हां, उसमें एक अवगुण भी था। और उसी एक अवगुण के कारण नल को ऐसी विपत्ति झेलनी पड़ी कि जैसी किसी ने न झेली हो। यह अवगुण था—जुआ खेलने का।

इन्हीं दिनों विदर्भ देश में 'भीम' नामक राजा राज्य करता था। वह भी बड़ा पराक्रमी था। राजा भीम के कोई सन्तान नहीं थी। इसलिए वे सन्तान के लिए चिन्ताकुल रहते।

एक दिन 'दमन' नामक ब्रह्मर्षि राजा भीम के यहां पधारे। राजा और रानी ने ब्रह्मर्षि दमन का बड़ा स्वागत-सत्कार किया। तपस्वी दमन ने प्रसन्न होकर राजा को सन्तान होने

का आशीर्वाद दिया।

समय पाकर राजा भीम के एक कन्या और तीन पुत्र हुए। उन्होंने कन्या का नाम 'दमयन्ती' और पुत्रों के नाम—दम, दान्त तथा दमन रखे।

दमयन्ती अपने रूप और शील के कारण प्रसिद्ध हो गई। तीनों पुत्र भी अपने बल-पौरुष में बेजोड़ थे।

जब दमयन्ती की अवस्था विवाह योग्य हुई तो राजा भीम को योग्य वर खोजने की चिन्ता हुई।

दमयन्ती की सेवा में दासियों की भीड़ जुटी रहती। सजी-धजी दमयन्ती जब सखी-सहेलियों के साथ उद्यान में जल-क्रीड़ा या विहार के लिए निकलती, तो देखने वाले देखते ही रह जाते। देखने वाले कहते कि इससे पहले उन्होंने ऐसा अद्‌भुत रूप-यौवन कभी नहीं देखा।

सुन्दरता में, गुणों में, और पौरुष में नल जैसा भी दूसरा कोई राजकुमार नहीं था। देखने वाले कहते कि यह तो कामदेव का ही अवतार है। उसकी प्रसिद्धि भी चारों ओर फैल गई।

लोग नल से दमयन्ती के रूप-यौवन की प्रशंसा करते और दमयन्ती से नल के रूप-गुणों की।

इस तरह एक-दूसरे के रूप-गुण-शील की प्रशंसा सुनते-सुनते बिना देखे ही वे एक-दूसरे को चाहने लगे।

नल का दमयन्ती के प्रति प्रेम दिनोदिन बढ़ता गया। दमयन्ती को देखने के लिए नल की व्याकुलता बढ़ने लगी।

एक दिन दमयन्ती के बारे में सोचता हुआ नल, महलों से निकल राजउद्यान में चला गया और वहां जलाशय के किनारे हथेली पर सिर टिकाए दमयन्ती के बारे में बैठा सोचता रहा।

राजा ने अपने पास ही सुनहरे पंखों वाले हंसों का एक दल देखा। वे हंस नल को बहुत प्रिय लगे। नल ने उनमें से एक हंस

को किसी तरह पकड़ लिया। नल प्यार से हंस की गर्दन और पीठ को सहलाने लगा तो हंस ने मनुष्य जैसी वाणी में नल से कहा, "हे नल ! आप मुझे छोड़ दें, तो मैं विदर्भ की राजकुमारी दमयन्ती के पास जाकर आपकी ऐसी प्रशंसा करूंगा कि वह आपके सिवा दूसरे किसी पुरुष को अपने मन में जगह नहीं देगी।"

नल ने उस विचित्र हंस को छोड़ दिया। वह तुरन्त हंसों के दल में जा मिला। फिर हंसों का वह दल वहां से उड़ा और विदर्भ देश के राजभवन के उद्यान में जा उतरा।

दमयन्ती अपनी सखियों और दासियों के साथ उद्यान में घूम रही थी। उन सुनहरे पंखों वाले अद्‌भुत हंसों को देखकर, दमयन्ती के मन में उन्हें पकड़ने की इच्छा हुई। अब तो सभी सखी-सहेलियां हंसों को पकड़ने के लिए उनका पीछा करने लगीं। दमयन्ती भी एक सुन्दर हंस को पकड़ने की चेष्टा करने लगी। दमयन्ती ने अपना दुपट्टा फैलाकर एक हंस के ऊपर डाल दिया और हंस को पकड़ लिया।

यह हंस तो वही था जो नल से दमयन्ती के बारे में वचन देकर आया था। वह भी दमयन्ती से बात करना चाहता था। संभवत: तभी तो जान-बूझकर पकड़ाई में आ गया था।

वह दमयन्ती से बोला, "राजकुमारी दमयन्ती ! मुझे छोड़ दो। छोड़ दोगी, तो मैं तुम्हारा मन-चाहा एक काम करूंगा। मैं मैं जानता हूं कि तुम मन से राजा नल को चाहती हो। वह तुम्हारे हृदय में बस चुका है। बात है भी ठीक। वह सचमुच तुम्हारे योग्य है और तुम उसके योग्य हो। हम तो राजहंस हैं। इधर से उधर उड़ते रहते हैं। हमसे कुछ छिपा थोड़े ही है। यदि तुम राजा नल की पत्नी बन जाओ, तो समझो कि तुम्हारा जन्म सफल हो गया। हमने भी बहुत दुनिया देखी है पर नल जैसे रूप-गुण वाला तो मनुष्यों में क्या, यक्षों, गन्धर्वों और

देवताओं में भी नहीं मिलेगा। तुम मुझे छोड़ दो, तो मैं तुम दोनों की जोड़ी मिलाने में सहायक हो सकता हूं।"

दमयन्ती ने इस दिव्य हंस को तुरन्त छोड़ दिया। यह दिव्य हंस यहां से उड़कर फिर निषध देश में गया और राजा नल को बताया कि जिस तरह आप दमयन्ती के लिए व्याकुल हैं, उसी तरह दमयन्ती भी आपके लिए व्याकुल है, मैंने उसे आप के बारे में सब कुछ बता दिया है। वह केवल आपको चाहती है। अब आप जैसा उचित समझें, करें।"

यह कहकर हंस उड़कर अपने दल में जा मिला।

हंस से नल की प्रशंसा सुनकर दमयन्ती की व्याकुलता बहुत बढ़ गई। उसे दिन में भूख नहीं लगती और रात को नींद नहीं आती। स्वर्ण कान्ति जैसा उसका चेहरा पीला पड़ने लगा। वह न अच्छे कपड़े पहनती और न गहने। जब देखो तब हथेली पर सिर रखे, अपने आप में डूबी, कुछ सोचती ही रहती। सहेलियों से भी बात न करती और लम्बी सांसें लेती रहती। उसकी पलकें हमेशा भीगी रहतीं।

दमयन्ती की ऐसी दशा देखकर सहेलियों ने उसके मन की बात जाननी चाही पर वह तो कुछ बोलती ही नहीं। दासियां स्नान, शृंगार, भोजन, शयन के लिए कह-कहकर थक जातीं पर दमयन्ती को किसी बात के लिए भी राजी न कर पातीं।

राजा भीम को पुत्री के अस्वस्थ होने की बात मालूम हुई, तो उसने राजवैद्य को बुला लिया। पर वैद्य बेचारा क्या करता! औषध से ठीक होने वाला कोई रोग उसे था ही नहीं।

अन्त में राजा ने निश्चय किया कि दमयन्ती की अवस्था

विवाह योग्य हो गई है। इसलिए इसके स्वयंवर की तैयारी करनी चाहिए।

राजा भीम ने स्वयंवर के लिए दिन निश्चित करके सभी राजाओं को निमंत्रण भिजवा दिया।

स्वयंवर का दिन पास आया तो विदर्भ में अनेक राजाओं का आना प्रारंभ हो गया। कोई सजे हाथी पर बैठकर चला आ रहा है, तो कोई बढ़िया घोड़ोंवाले रथ पर। सारी राजधानी में स्वयंवर की तैयारी के लिए हलचल मच गई। सड़कें, बाज़ार और भवन सजने लगे। स्वयंवर के लिए विशाल मण्डप रचा गया। आने वाले राजाओं को ठहराने के लिए उचित व्यवस्था की गई।

बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से सजे हुए एक से एक बढ़कर सुन्दर राजकुमार और राजा राजधानी की शोभा बढ़ाने लगे। राजा भीम ने स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए आनेवालों का खूब आदर-सत्कार किया।

जिन दिनों विदर्भ में स्वयंवर की चहल-पहल शुरू हो रही थी, देवर्षि नारद और पर्वत मृत्युलोक से स्वर्गलोक पधारे। वे जब देवराज इन्द्र के यहां पधारे, तो देवराज ने उनका स्वागत-सत्कार करने के बाद संसार का समाचार पूछा।

महर्षि नारद ने उन्हें बताया कि मृत्युलोक में आजकल विदर्भ राजकुमारी दमयन्ती का स्वयंवर होने वाला है। उन्होंने बताया कि राजकुमारी दमयन्ती अपने रूप-यौवन और शील में बेजोड़ है, इसलिए सभी राजा और राजकुमार उसे पत्नी रूप में प्राप्त करने की इच्छा से विदर्भ में एकत्र हुए हैं।

ये बातें हो ही रही थीं कि अग्नि, वरुण और यमराज देव-राज इन्द्र के यहां पधारे। नारद जी के मुंह से दमयन्ती की प्रशंसा सुनकर ये देवता बोले कि देवराज इन्द्र सहित हम भी

स्वयंवर में सम्मिलित होंगे। बस फिर क्या था ! महर्षि नारद और पर्वत के चले जाने के बाद ये चारों देवता स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए धरती पर उतर आए और विदर्भ जा पहुंचे।

यहीं पर इन्हें राजा नल स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए जाते मिल गए। नल के सुन्दर रूप और स्वस्थ-बलिष्ठ शरीर को देखकर देवता चकित रह गए। उन्होंने सोचा कि नल के सामने हम क्या चीज हैं ! दमयन्ती हम में से किसी को न वरकर, नल को ही वरेगी।

वे देवता फिर कुछ सोचकर, नल से बोले—"राजा नल ! हमें आपकी सहायता की आवश्यकता है। हम आपको अपना दूत बनाकर एक सन्देश देना चाहते हैं। बताइए, आप हमारा यह काम करेंगे न ?"

सहायता चाहनेवाले उन देवताओं को आश्वासन देकर राजा नल ने उन्हें नमस्कार करके पूछा—"कृपया बताइए, आप कौन हैं और मुझे दूत बनाकर कहां भेजना चाहते हैं ? आपका वह कौन-सा कार्य है जिसे आप मुझे दूत बनाकर पूरा करना चाहते हैं ?"

निषधराज नल के इस प्रकार पूछने पर देवराज इन्द्र ने कहा—"राजन् ! आप हमें देवता समझें। हम दमयन्ती को प्राप्त करने के लिए यहां आए हैं। मैं इन्द्र हूं। ये अग्निदेव हैं। ये वरुण हैं और ये यमराज। आप दमयन्ती के पास जाकर उसे हमारे आने की सूचना दे दीजिए और कहिए कि हम उसे देखने के लिए आए हैं। हम चाहते हैं कि स्वयंवर में वह हम चारों में से किसी का वरण करे।

देवराज इन्द्र की बात सुनकर राजा नल ने कहा, "देव-गण ! मैं स्वयं भी तो दमयन्ती को पत्नी-रूप में प्राप्त करना

चाहता हूं। मैं भी तो स्वयंवर में सम्मिलित होने जा रहा हूं। इसलिए जिस दमयन्ती को मैं प्राप्त करना चाहता हूं, उसे प्राप्त करने के लिए आप मुझे ही दूत बनाकर न भेजिए। आप ही सोचिए, मैं जिस दमयन्ती को प्राप्त करने का मन में निश्चय कर चुका हूं, उसे दूसरे के लिए कैसे छोड़ सकता हूं। इसलिए मैं आप से क्षमा चाहता हूं।"

देवता बोले, "राजन्! आप हमारा कार्य करने के लिए वचनबद्ध हैं। क्या आप अपनी बात को झूठा करेंगे? इसलिए हमारा दूत बनकर जाइए और दमयन्ती तक हमारा सन्देश पहुंचाइए।"

देवताओं के ऐसा कहने पर राजा नल ने कहा, "विदर्भराज के सभी राजभवनों पर पहरा होगा। विशेष रूप से अन्तःपुर में तो किसी अपरिचित पुरुष का प्रवेश सम्भव ही नहीं है। फिर आप ही बताइए कि मैं दमयन्ती तक कैसे पहुंच सकता हूं।"

तब इन्द्र ने कहा, "राजन्! आप वहां तक जा सकेंगे। हम देवता हैं। हमारे पास तरह-तरह की शक्तियां हैं। हमारी शक्ति के प्रभाव से दमयन्ती के भवन में प्रवेश करते समय आपको कोई देख नहीं सकेगा। हां, आप सबको देख सकेंगे। दमयन्ती भी आपको देख सकेगी। अब आप निश्चिंत होकर जाइए और हमारा सन्देश दमयन्ती को सुनाइए।"

राजा नल देवताओं का दूत बनकर विदर्भ-राजकुमारी के पास चला। राजा नल ने अन्तःपुर में सखियों से घिरी हुई अत्यन्त सुन्दरी राजकुमारी दमयन्ती को देखा। राजा नल ने उस दिव्य हंस से दमयन्ती के बारे में जो कुछ सुना था, वह उसे उससे भी अधिक अवर्णनीय रूप-गुणों की खान दिखाई दी। उसके अंग अत्यन्त कोमल थे। उसकी कान्ति कमल जैसी थी। बड़ी-बड़ी आंखें थीं और पतली कमर। देखकर चन्द्रमा भी लजा

जाए, ऐसी उसके मुख की शोभा थी। मन्द-मन्द मुस्कराती वह, सखियों से हास-परिहास कर रही थी।

उस रूप-लावण्य की मूर्ति को देखते ही नल का शरीर रोमांचित हो उठा। अपनी प्रिया के प्रथम दर्शन के समय नल के मन में उसे पत्नी रूप में प्राप्त करने की इच्छा और भी प्रबल हो गई। पर इस समय तो नल देवताओं का दूत बनकर ही यहां आया था, अपने काम के लिए नहीं। नल को अपना कर्त्तव्य याद हो आया और उसने अपने मन के समस्त भावों को दबा दिया।

एक अत्यन्त रूपवान् पुरुष को वहां आया देखकर दमयन्ती की सखियां और दासियां चकित रह गईं और स्वागत में उठ खड़ी हुईं। वे मन ही मन उस अत्यन्त सुन्दर पुरुष की प्रशंसा करने लगीं। वे सोचने लगीं—'बिना रोक-टोक अन्तःपुर में पधारने वाला यह पुरुष अवश्य ही कोई देवता है।' क्योंकि मनुष्यों में वैसा रूप-गुण-तेज अभी तक उनमें से किसी ने नहीं देखा था। फिर अन्तःपुर में कोई अपरिचित पुरुष प्रवेश भी तो नहीं पा सकता था! वे नल के रूप और तेज से प्रभावित होकर उनसे कुछ भी पूछ नहीं सकीं।

राजकुमारी दमयन्ती भी अब तक एकटक नल को ही देख रही थी। वह भी नल के रूप और तेज से सम्मोहित हो चुकी थी। कुछ क्षण बीतने पर दमयन्ती ने मन्द-मधुर मुस्कान के साथ नल से नम्रतापूर्वक पूछा, "आप कौन हैं? आप इस अन्तःपुर में प्रवेश कैसे कर सके? क्या आपको किसी ने रोका नहीं? मेरा यह भवन सब ओर से सुरक्षित है। यहां का कोई भी कर्मचारी राजाज्ञा के उल्लंघन का साहस नहीं कर सकता। अपराधियों को कठोर दण्ड दिया जाता है। इस पर भी आप यहां कैसे आ पहुंचे? आपका परिचय क्या है?"

नल ने धीरे से उत्तर दिया, "राजकुमारी! मैं नल हूं। आपने मेरा नाम पहले भी सुना होगा। इस समय मैं इन्द्र, अग्नि, वरुण और यम इन चार देवताओं का दूत बनकर यहां आया हूं। मैं उन देवताओं के प्रभाव से इस भवन में पहरेदारों से अनदेखा चला आया हूं। वे देवता चाहते हैं कि आप उनमें से किसी एक को अपना पति चुनें। उनका यह सन्देश लेकर मैं आया हूं। आगे आपकी इच्छा। आप जैसा चाहें वैसा करें।"

दमयन्ती ने नल से कहा, "उन देवताओं को मेरा नमस्कार निवेदन करें। और जहां तक पति रूप में किसी को चुनने का प्रश्न है, मैं पहले ही आपको अपना पति स्वीकार कर चुकी हूं। मेरे पति तो आप ही हैं। अब आप आज्ञा कीजिए कि मैं आपकी क्या सेवा करूं ! मैं आपकी और मेरा सब कुछ आपका। आप निश्चित होकर मुझे स्वीकार करें। जब से उस दिव्य हंस से मैंने आपकी बातें सुनी हैं, मैं तभी से आपकी हो चुकी हूं। हे मेरे मन-प्राण के स्वामी ! आपको पति रूप में पाने के लिए ही इस स्वयंवर का आयोजन हुआ है। हे प्रिय ! आपके चरणों में भक्ति रखने वाली मुझ दासी को यदि आप स्वीकार नहीं करेंगे, तो मैं आपके ही कारण विष, आग, जल अथवा फांसी के द्वारा अपने प्राण दे डालूंगी।"

दमयन्ती की सारी बातें सुनकर राजा नल ने कहा, "तुम देवताओं को छोड़कर मुझ मनुष्य को क्यों पति बनाना चाहती हो ? मैं तो देवताओं की पगधूलि के बराबर भी नहीं हूं। तुम्हें उन देवताओं में से ही किसी एक को चुनना चाहिए। देवताओं की इच्छा के विरुद्ध कार्य करने पर देवता क्रुद्ध हो जाते हैं और वे जो चाहें कर सकते हैं। वे अपने विरोधियों के धन और प्राणों को हर लेते हैं। इसलिए ऐसा कोई कार्य न करो जिससे मेरे प्राणों पर संकट आए। तुम उन्हीं में से किसी एक को चुन लो।

देवता की पत्नी बन जाने पर संसार और स्वर्ग की कोई भी वस्तु तुम्हारे लिए दुर्लभ नहीं रहेगी । तुम्हें मनचाहे भोग प्राप्त होंगे। भला सारे संसार को भस्म कर डालने की शक्ति रखने वाले अग्निदेव को कौन नारी अपना पति नहीं बनाना चाहेगी !

" और, जिनके दण्ड के भय ले लोग शुभ कार्यों की ओर प्रवृत्त होते हैं, उन यमराज को कौन स्त्री अपना पति बनाना नहीं चाहेगी ।

" दैत्यों और दानवों पर विजय पाने वाले देवराज इन्द्र को पति रूप में पाकर कौन-सी नारी अपने को सौभाग्यशालिनी नहीं समझेगी।

" और यदि चाहो तो वरुण देव को तुम अपना पति बना सकती हो। मैं तुम्हारा शुभचिन्तक हूं। मेरी बात को यों ही मत टालो। "

निषधराज नल के यों समझाने पर आंसुओं की धार बहाती हुई दमयन्ती बोली, "राजन्! मैं सब देवताओं को नमस्कार करके उनसे आपके मंगल की याचना करती हुई आपको ही अपना पति स्वीकार करती हूं। मैं सच कहती हूं, यह मेरा अटल निश्चय है।"

ऐसा कहकर दमयन्ती दोनों हाथ जोड़कर थर-थर कांपने लगी। राजा नल ने उससे कहा, "मैं इस समय देवताओं का दूत बनकर आया हूं और अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा हूं। इसलिए तुम वैसा ही कार्य करो, जो मेरे कार्य के अनुकूल हो मैं देवताओं के कहने से उनके कार्य के लिए यहां आया हूं। इस समय मैं अपने स्वार्थ का कार्य कैसे कर सकता हूं। मेरे धर्म का रक्षा हो तो उसके फलस्वरूप मेरे स्वार्थ की सिद्धि भी हो सकती है।

यह सुनकर आंसू बहाती हुई रुंधे गले से दमयन्ती ने कहा, "हे राजन् ! वह उपाय मैंने सोच लिया है। आप निश्चित रहिए। कोई भी आप पर कर्त्तव्यपालन न करने या स्वार्थ सिद्ध करने का दोष नहीं लगाएगा। आप, वे देवता और अन्य भी स्वयंवर-मण्डप में पधारें। मैं उन देवताओं के सामने ही आपका वरण करूंगी। ऐसा करने पर आप पर कोई बात नहीं आएगी।"

राजकुमारी दमयन्ती के ऐसा कहने पर नल वहां से चला आया और सीधा देवताओं के पास पहुंचा।

देवताओं के पूछने पर नल ने सारी बातें सच-सच बता दीं। उसने बताया—"दमयन्ती मुझे ही अपना पति बनाना चाहती है और उसने कहा है कि देवता भी स्वयंवर में पधारें। मैं उनकी उपस्थिति में नल का वरण करूंगी। अब आप सब देवतागण जैसा ठीक समझें, वैसा करें।"

देवता सारा समाचार सुनकर वहीं अन्तर्धान हो गए और राजा नल विदर्भ में स्वयंवर के दिन की प्रतीक्षा करने लगे।

स्वयंवर का शुभ दिन और शुभ मुहूर्त आने पर सभी राजा और राजकुमार मण्डप में पधारे। प्रत्येक यही चाहता था कि दमयन्ती उसे ही वरमाला पहनाए।

मण्डप खूब सजा हुआ था। तोरणद्वार बड़ा विशाल था और विशेष रूप से सजाया गया था। बैठने के लिए सुखदायक आसनों की व्यवस्था थी। मण्डप राजाओं के मणिमय आभूषणों से चमक रहा था। जैसे आकाश में तारे शोभायमान होते हैं, वैसे ही वे सब भूपाल उस मण्डप में शोभायमान थे।

जब राजकुमारी दमयन्ती हाथ में वरमाला लिए उस मण्डप में आई, तो सभी राजाओं की दृष्टि उस पर जा टिकी। राजाओं को लगा—जैसे इसने उनके चित्त को चुरा लिया है। जिस

राजा की दृष्टि दमयन्ती के जिस किसी अंग पर पड़ी, वह वहीं टिक गई। उसका प्रत्येक अंग इतना कमनीय और सुन्दर था कि उसे देखते जी नहीं अघाता था।

फिर दमयन्ती को चारणों द्वारा प्रत्येक राजा के नाम, यश और पराक्रम का परिचय दिया जाने लगा। दमयन्ती पहले से ही नल को वरण करने का निश्चय कर चुकी थी। वह नीची दृष्टि किए आगे बढ़ती रही। जिस राजा के सामने वह आती, उसका चेहरा आशा से चमकने लगता और जब सामने से आगे बढ़ जाती तो निराशा से फीका पड़ जाता।

कुछ आगे चलने पर जब चारण ने नल का परिचय दिया और दमयन्ती ने दृष्टि उठाकर सामने देखा, तो उसे नल जैसी आकृति के पांच पुरुष बैठे दिखाई दिए। सबकी अनुहार नल जैसी। रंच मात्र भी अन्तर नहीं। अब तो दमयन्ती के सामने समस्या पैदा हो गई कि इनमें वास्तविक नल कौन-सा है। उसने बार-बार पांचों को देखा पर यह निश्चय नहीं कर सकी कि वास्तविक नल कौन है? फिर उसे याद आया कि जिन चार देवताओं ने राजा नल को दूत बनाकर भेजा था, यहां वे चारों भी राजा नल का रूप बनाकर बैठे हुए हैं। देवता सबकुछ कर सकते हैं।

राजकुमारी दमयन्ती वास्तविक नल को न पहचान सकने से बड़ी दुखी हुई। अन्त में उसने निश्चय किया कि वास्तविक नल की पहचान के लिए मैं देवताओं की ही शरण लूंगी। यह निश्चय करके उसने देवताओं को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और कांपती हुई बोली—"मैंने दिव्य हंस से राजा नल की प्रशंसा सुनकर उन्हें ही अपना पति मान लिया है। यदि मैं जरा भी झूठ नहीं बोल रही हूं, तो देवगण नल को पहचानने में मेरी सहायता करें। मैं फिर आपसे प्रार्थना करती हूं कि यदि मैंने

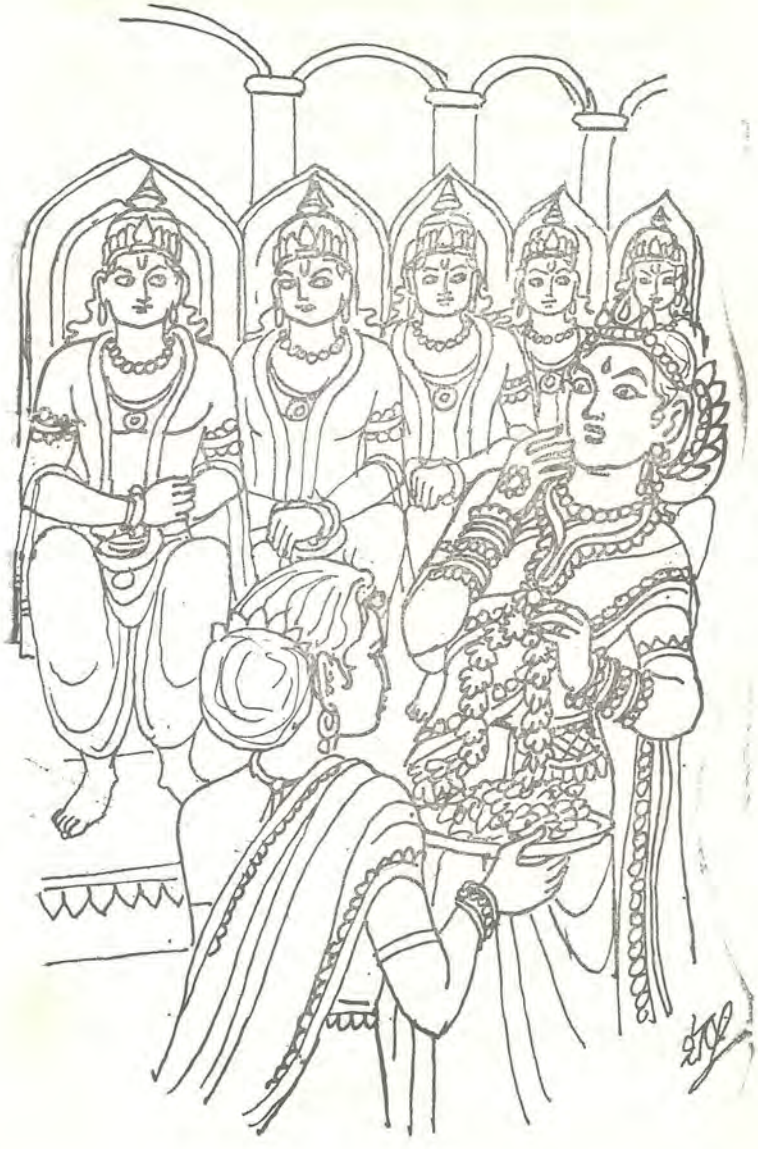

मन, वचन और कर्म द्वारा कभी भी सदाचार को न छोड़ा हो तो देवगण मुझे नल की पहचान करा दें।

"यदि विधाता ने निषधराज नल को ही मेरा पति निश्चित किया हो, तो उस सत्य के प्रभाव से देवगण मुझे वास्तविक नल की पहचान करवा दें। शक्तिशाली देवगण अपने-अपने वास्तविक रूप में मेरे सामने प्रकट हो जाएं जिससे मैं वास्तविक नल का पति रूप में वरण कर सकूं।"

चिन्ताग्रस्त दमयन्ती का यह करुण विलाप सुनकर और नल के प्रति उसके सच्चे प्रेम को देखकर देवताओं ने दमयन्ती को वह शक्ति प्रदान की जिसके द्वारा वह मनुष्य और देवता में अन्तर कर सके।

अब दमयन्ती ने देखा कि देवताओं में पसीने की बूंदें नहीं हैं। उनकी आंखों की पलकें नहीं गिरतीं और उन्होंने जो पुष्प-मालाएं पहन रखी हैं, वे कुम्हलाई तो हैं ही नहीं, उलटे और खिल रही हैं। वे सिंहासन पर बैठे हैं किन्तु अपने पैरों से धरती को नहीं छू रहे हैं। और उनकी परछाईं भी नहीं पड़ रही है।

ये सारे लक्षण चार पुरुषों में तो थे, पर पांचवें में नहीं थे। बस फिर क्या था। अब निषधराज नल को पहचानने में दमयन्ती को कोई कठिनाई नहीं हुई।

नल की दृष्टि से दृष्टि मिलते ही लज्जा और संकोच के कारण दमयन्ती की पलकें झुक गईं। उसने नल के वस्त्र का छोर पकड़कर, वरमाला उसके गले में डाल दी।

यह देखकर कि दमयन्ती ने नल के गले में वरमाला पहना दी, वहां आए राजा हताश होकर लम्बी सांसें खींचने लगे और उनके मुंह से 'हाय' शब्द निकल पड़ा।

मण्डप में उपस्थित ऋषि-मुनि और ब्राह्मणों ने वर-वधू को मंगल-आशीर्वाद दिया। सभी लोग राजा नल के भाग्य की

सराहना करने लगे।

नल ने दमयन्ती से कहा, "हे कल्याणि! तुमने देवताओं को छोड़कर मुझ मानव का वरण किया, इससे मैं अनुमान लगा सकता हूं कि मेरे प्रति तुम्हारे मन में कैसा प्रेम है। अपने इस असाधारण प्रेम से तुमने मुझे खरीद लिया है। मैं सदा तुम्हारी आज्ञा का पालन करूंगा। जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे, तब तक तुम्हारा मेरे हृदय और मन पर अधिकार रहेगा। मैं तुम्हारे सिवा किसी दूसरी नारी को पत्नी रूप में स्वीकार नहीं करूंगा। मैं तुमसे प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं सदा तुम्हारा रहूंगा।"

दमयन्ती ने भी हाथ जोड़कर लजाती दृष्टि से एक बार फिर नल को देखा और मन-ही-मन उसका अभिनन्दन किया। वे दोनों एक-दूसरे को पाकर बहुत प्रसन्न हुए। उन दोनों ने इन्द्र, अग्नि, वरुण और यम की ओर देखकर उन्हें नमस्कार किया और मन में उनके शरणागत हुए।

दमयन्ती के अनन्य प्रेम से प्रभावित होकर देवताओं ने नल को आठ वरदान दिए।

देवराज ने प्रसन्न होकर वरदान दिया कि मैं यज्ञ में तुम्हें प्रत्यक्ष दर्शन दूंगा और अन्त में तुम्हें शुभ गति प्रदान करूंगा।

महातेजस्वी अग्निदेव ने नल को अपने ही समान तेजस्वी होने और राजा नल जब और जहां चाहें, वहीं अपने प्रकट होने का वरदान दिया।

यमराज ने वरदान दिया कि राजा नल के बनाए भोजन में उत्तमोत्तम स्वाद और रस होगा। धर्म में इनकी दृढ़ आस्था बनी रहेगी।

जल के देवता वरुण ने वरदान दिया कि राजा नल जब चाहेंगे, मैं प्रकट हो जाऊंगा और राजा नल जिस भी पुष्पमाला को पहनेंगे, उसमें से दिव्य गन्ध आएगी।

इस प्रकार वरदान देकर देवता स्वर्गलोक को चले गए। स्वयंवर में पधारे हुए दूसरे राजा लोग भी अपने-अपने देशों को लौट गए।

सब राजाओं के लौट जाने के बाद राजा भीम ने शास्त्र-विधि के अनुसार नल-दमयन्ती का विवाह सम्पन्न किया।

विवाह के बाद भी राजा नल कुछ दिन विदर्भ में ही रहे और बाद में अपने ससुर राजा भीम से आज्ञा लेकर दमयन्ती सहित अपने निषध देश में आ गए।

राजा नल दमयन्ती के साथ आनन्दपूर्वक निषध देश में रहकर प्रजापालन करने लगे।

राजा नल ने अश्वमेध आदि कई यज्ञ किए और ऋषियों-मुनियों तथा ब्राह्मणों को पर्याप्त दान-दक्षिणा दी।

समय पाकर दमयन्ती ने एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म दिया। पुत्र का नाम 'इन्द्रसेन' और पुत्री का नाम 'इन्द्रसेनी' रखा।

राजा नल का राज्य धन-धान्य से पूर्ण था। प्रजा सुखी थी और राजकर्मचारी सावधान होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करते थे।

दमयन्ती का स्वयंवर सम्पन्न हो जाने पर जब इन्द्र, अग्नि, वरुण और यम स्वर्गलोक को लौट रहे थे तो मार्ग में उन्हें कलियुग और द्वापर मिले।

उन्हें देखकर देवराज इन्द्र ने पूछा, "हे कले ! आप द्वापर के साथ इस समय कहां जा रहे हैं ?"

कलि ने उत्तर दिया, "हे इन्द्रदेव! हम दमयन्ती के स्वयंवर में जा रहे हैं। मैं उसे पत्नी रूप में प्राप्त करना चाहता हूं।"

तब इन्द्रदेव ने हंसकर कहा, "वह स्वयंवर तो हो भी गया। हम सब वहीं से तो आ रहे हैं। दमयन्ती ने राजा नल को अपना पति चुन लिया है।"

इन्द्र से यह सुना तो कलियुग को क्रोध आ गया। वह बोला, "दमयन्ती ने देवताओं को छोड़कर, उनके सामने ही मनुष्य का वरण किया। इस कार्य से उसने देवताओं का अपमान किया है। इसलिए उसे भारी दण्ड मिलना चाहिए।"

कलियुग की क्रोध भरी बात सुनकर देवगण बोले, "दमयंती ने हमारा अपमान नहीं किया। हमारी आज्ञा लेकर ही उसने नल को पति चुना है। और फिर नल कोई साधारण मनुष्य थोड़े ही हैं। वह सर्वगुणसम्पन्न राजा है। उसने ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए चारों वेदों और पांचवें वेद इतिहास-पुराण का भी अध्ययन किया है। वह नियमपूर्वक नित्य पांचों यज्ञ करता है। वह धर्म के दस लक्षणों का पालन करने वाला है। उसका बुरा चाहनेवाला अपना ही बुरा करेगा।"

यह कहकर चारों देवता स्वर्गलोक को चले गए।

देवताओं के चले जाने पर कलियुग ने द्वापर से कहा, "हे द्वापर! मैं अपने क्रोध को रोक नहीं पा रहा हूं। मैं नल के शरीर में प्रवेश करके उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर दूंगा। फिर उसका राज्य छिन जाएगा और उसे दमयन्ती से भी अलग होना पड़ेगा। तुम जुए के पासों में घुसकर उसे हराने की जिम्मेदारी संभालो!"

इस तरह कलि द्वापर को समझाकर निषध देश में राजा नल के निवास पर आ गया। किन्तु धर्मात्मा राजा नल में वह प्रवेश नहीं कर सका। कारण यह था कि जब तक नल कोई अनुचित कार्य नहीं करता तब तक तक कलि उसमें प्रवेश तो दूर रहा, उसे छू भी नहीं सकता था। इसी तरह बारह वर्ष बीत

गए। तब एक दिन राजा नल लघुशंका करके आए और हाथ-मुंह धोकर सन्ध्योपासना करने बैठ गए। पैर धोने का उन्हें ध्यान ही नहीं रहा। बस, कलि का काम बन गया। राजा की इस भूल के कारण कलियुग को राजा के शरीर में प्रवेश करने का अवसर मिल गया।

नल में प्रवेश करके कलि ने दूसरा रूप धारण करके पुष्कर के पास जाकर कहा, "चलो, राजा नल के साथ जुआ खेलो। तुम अवश्य जीत जाओगे। नल का राज्य तुम्हारा राज्य होगा। तुम राजा बन जाओगे।"

प्रेरणा पाकर पुष्कर राजा नल के पास जुआ खेलने गया। कलि भी सांड का रूप धर कर पुष्कर के साथ हो लिया। यह पुष्कर राजा नल का भाई ही लगता था।

नल के पास पहुंचकर पुष्कर ने कहा, "राजन्! आइए, आज हम दोनों धर्मपूर्वक जुआ खेलें।"

पुष्कर से जुआ खेलने का निमंत्रण मिलने पर राजा नल अपने आपको रोक नहीं सका। वह उसी समय जुआ खेलने के लिए तैयार हो गया। दमयन्ती के सामने ही वह जुआ खेलने लगा।

राजा नल दांव पर दांव हारने लगा। हीरे-मोती, सुवर्ण-चांदी, रथ-हाथी, वस्त्र और आभूषण जो कुछ था, बारी-बारी सभी दांव पर लगा दिया और हार गया।

दमयन्ती तथा नल के दूसरे मित्रों ने नल को जुआ खेलने से रोकने का बहुत प्रयत्न किया, पर सब व्यर्थ गया। नल नहीं माना, नहीं माना। फिर प्रमुख नागरिक और मंत्री भी मिल-कर राजा के पास आए। उन्होंने द्वारपाल द्वारा दमयन्ती से कहलवाया कि राजा से मिलना चाहते हैं। दमयन्ती ने राजा से निवेदन किया कि पुरवासी और मंत्रीगण आपके दर्शन करना

चाहते हैं, उन्हें भीतर आने की आज्ञा दें, पर दमयन्ती के बार-बार पूछने पर भी राजा ने कोई उत्तर नहीं दिया। दमयन्ती गिड़गिड़ाती रही और निराश लौट गई। पुरवासी और मंत्रीगण भी निराश होकर लौट गए। उन्हें लगा कि राजा नल शीघ्र ही राज्य खो बैठेगा। सच ही कहा है जब विनाशकाल आता है तो मनुष्य अपने शुभचिन्तकों की बात भी नहीं सुनता।

कलियुग ने राजा की बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी।

जुए का यह खेल कई महीनों तक चलता रहा। एक-एक करके राजा नल ने सब कुछ हार दिया।

जब दमयन्ती ने देखा कि महाराज पर जुए का पागलपन सवार हो गया है, तो उसने अपनी धाय को बुलाकर कहा कि तुम सब मंत्रियों को, 'राजा ने बुलाया है', ऐसा कहकर बुला लाओ और उन्हें बताओ कि राजा ये-ये चीजें हार चुके हैं।

मंत्री राजा की आज्ञा समझकर फिर राजद्वार में आए। दमयन्ती ने उनके आने की सूचना राजा को दी पर राजा ने दमयन्ती को कोई उत्तर नहीं दिया। वह लज्जित होकर महल के भीतर चली गई।

उसे सूचना मिली कि राजा नल लगातार हारते जा रहे हैं और लगभग सारा राज्य हार चुके हैं। तब दमयन्ती ने धाय को भेजकर सारथी को बुला भेजा। सारथी के आने पर दमयन्ती ने उसे सारी स्थिति समझाकर कहा कि तुम हमारे पुत्र इन्द्रसेन और पुत्री इन्द्रसेना को रथ पर बिठाकर मेरे मायके कुण्डनपुर चले जाओ। वहां इन दोनों बालकों, रथ और घोड़ों को मेरे भाई के पास सौंप देना। तुम भी चाहो तो वहीं रह जाना।

सारथी ने मंत्रियों को इस बात की सूचना दी और उनकी सलाह से उसने विदर्भ देश के कुण्डिनपुर नगर को प्रस्थान किया। सारथी बच्चों, रथ और घोड़ों को वहां छोड़कर स्वयं

अयोध्या नगरी को चला गया। उसने अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण के यहां सारथी की नौकरी कर ली और अपना पेट पालने लगा।

जुए का यह खेल तब समाप्त हुआ जब राजा नल अपना सब कुछ हार चुके। पुष्कर ने हंसते हुए, राजा नल से कहा, "नल ! अब तुम्हारे पास दमयन्ती के सिवा कुछ नहीं बचा है। यदि उसे दांव पर लगाना चाहो तो खेल फिर शुरू हो सकता है।"

पुष्कर के ये कठोर वचन सुनकर नल का हृदय फटने को हो गया पर वह चुप रहा। अब नल ने अपने अंगों के सारे आभूषण उतार दिए और केवल एक धोती ही पहने हुए था।

नल और दमयन्ती सिर नीचा किए नगर से निकलकर तीन दिन नगर के बाहर टिके रहे।

पुष्कर को जब पता चला कि नल दमयन्ती सहित नगर से बाहर टिका हुआ है और प्रजा तथा राजपुरुषों में नल के प्रति प्रेमभाव है, तो उसने घोषणा करवा दी कि जो भी नागरिक नल के साथ अच्छा व्यवहार करेगा, उसे प्राणदण्ड दिया जाएगा।

पुष्कर की इस घोषणा से भयभीत होकर प्रजा का कोई भी व्यक्ति राजा नल के पास तक नहीं गया। तीन दिन तक नल-दमयन्ती ने केवल पानी पीकर काटे। जो कल तक राजा-रानी थे, आज उनके पास दो रोटियां भी नहीं थीं।

मारे भूख के उन दोनों का बुरा हाल था। वे वहां से अनिश्चित स्थान की ओर चल पड़े। मार्ग में जो फल-मूल मिल जाते, उनसे किसी तरह काम चलाते और आगे के लिए चल पड़ते। कई दिनों तक उन्हें भरपेट भोजन नहीं मिला।

एक जंगल में चलते हुए नल ने ऐसे पक्षी देखे जिनके पंख

सुनहरे थे। नल ने सोचा कि यदि मैं इन पक्षियों को किसी तरह पकड़ सकूं, तो इनका मांस खाकर भूख शान्त की जा सकती है और इनके सुनहरे पंखों से कुछ धन भी मिल सकता है।

नल ने दाना चुग रहे उन पक्षियों के ऊपर अपनी धोती जाल की तरह डाल दी ताकि उन्हें पकड़ा जा सके। परन्तु वे पक्षी उस धोती को ही लेकर उड़ गए। उड़ते हुए उन पक्षियों ने देखा कि नल लाज के मारे मुंह नीचा किये एकदम नंगा धरती पर खड़ा है। तब वे उड़ते-उड़ते मनुष्य की वाणी में बोले, "ऐ अभागे भ्रष्ट बुद्धि नल ! हम पक्षी नहीं, पक्षियों के रूप में जुए के पासे हैं। यह धोती जो तुम ले आए थे, इसे उतरवाने यहां आए थे। हम जिस पर रुष्ट होते हैं, उसे नंगा करके छोड़ते हैं। तुम्हारे पास एक धोती रह जाने से हम प्रसन्न नहीं थे।

नग्न राजा ने दमयन्ती को सम्बोधित करके कहा, "इन जुए के पासों से मेरा राज्य गया और आज मैं ऐसा दीन-हीन हो गया हूं कि भोजन तक के लिए तरस रहा हूं, वे मुझे एकदम नंगा करके चले गए हैं। दुःख से मेरा हृदय फटा जा रहा है। मैंने तुम्हारे हितकारक वचनों को अनसुना कर दिया, यह उसी का परिणाम है। मैं जैसा भी हूं, तुम्हारा पति हूं और तुम्हारे, हित की बात बताना चाहता हूं।

"ये सामने बहुत से मार्ग हैं जो दक्षिण की ओर जाते हैं। और यह मार्ग ऋक्षवान् पर्वत को लांघकर अवन्ती देश को जाता है। वह उधर ऊंचा विन्ध्य पर्वत दिखाई दे रहा है और यह पयोष्णी नदी है। यहां पास ही ऋषि-मुनियों के बहुत-से आश्रम हैं, जहां बहुत-से फल-कन्द-मूल मिल सकते हैं। यह मार्ग विदर्भ देश की ओर जाता है और वह कोशल देश की ओर। दक्षिण दिशा में इससे आगे का देश 'दक्षिणापथ' कहलाता है।"

सभी मार्गों को बताते हुए नल का आशय दमयन्ती से

छिपा नहीं रहा। वह आंसू बहाती हुई गद्‌गद वाणी से बोली, "महाराज ! आप मन में जो कुछ सोच रहे हैं, उसकी कल्पना करके मेरा हृदय फटा जा रहा है। आपका राज्य चला गया। आपके शरीर पर एक भी वस्त्र नहीं रहा और कई दिनों से आप भूखे हैं। ऐसी बुरी अवस्था में, मैं आपको निर्जन वन में छोड़कर कैसे जा सकती हूं? महाराज ! आप जब इस भयंकर वन में मार्ग चलने से थके हुए, भूख-प्यास से व्याकुल और दुखी हैं, तो मैं आपको छोड़कर कैसे जा सकती हूं? इस विपत्ति के समय मैं आपके ही पास रहना चाहती हूं ताकि आपकी सेवा कर सकूं और धीरज बंधा सकूं। पति के सब दुःखों की पत्नी से बढ़कर कोई औषध नहीं है। आपके पास रहकर यदि मैं आपके दुःखों को कुछ भी कम कर सकी, तो मेरे लिए यही महान् सुख होगा।"

नल ने उत्तर दिया, "तुम ठीक कह रही हो। दुःख में पत्नी से बढ़कर दूसरा कोई मित्र नहीं होता। तुम तो यों ही घबरा रही हो। मैं तुम्हें अपने से कभी भी अलग करना नहीं चाहता हूं। मैं अपने शरीर को छोड़ सकता हूं पर तुम्हें नहीं।"

दमयन्ती ने कहा, "यदि आप मुझे छोड़ना नहीं चाहते तो मुझे मेरे मायके विदर्भ का मार्ग क्यों बता रहे हैं? इससे मेरा दुःख दूना हो रहा है। यदि आप चाहते हैं कि मैं अपने मायके चली जाऊं, तो आप भी चलिए। मेरे पिता और भाई आपका पूरा आदर-सत्कार करेंगे और आप वहां सुखपूर्वक रहेंगे।"

नल ने कहा, "यह ठीक है कि विदर्भ में हम अपने ही घर की तरह सुख से रहेंगे किन्तु इन विपत्ति के दिनों में, मैं कहीं नहीं जाऊंगा। जब मैं तुम्हारे स्वयंवर के लिए विदर्भ गया था, तो मैं राजा था और आज भिखारी हूं। इस दशा में मैं वहां कदापि नहीं जाऊंगा।"

वे इसी प्रकार की बात करते हुए चलते रहे और एक पड़ाव पर जा पहुंचे।

दमयन्ती की एक ही धोती को दोनों ने आधा-आधा पहन रखा था। रात को दोनों भूखे और थके हुए धरती पर सो गए।

मार्ग के कष्ट से थकी हुई दमयन्ती को थोड़ी देर में नींद आ गई पर चिन्ता से व्याकुल नल की आंखों में नींद नहीं थी। नल ने सोच-विचार किया—'क्या करूं जिससे यह विपत्ति टले। मैं दमयन्ती को छोड़कर अकेला रहूं, तो हो सकता है दमयन्ती अपने मायके चली जाए या यह भी हो सकता है कि वह प्राण त्याग दे। मेरे छोड़कर चले जाने पर वह अकेली कैसे इस लम्बे और भयानक मार्ग को पार करके विदर्भ में जाएगी! उसे हिंसक जानवरों और दुष्टों से कौन बचाएगा! यदि मैं इसे छोड़कर कहीं नहीं चला जाता, तो मेरे सौ बार कहने पर भी मुझे छोड़कर मायके नहीं जाएगी। यदि मैं मर पाता तो इस दुःख से तो छूट जाता!'

नल इस तरह की कितनी ही बातें सोचता रहा। अन्त में उसने निश्चय किया कि वह दमयन्ती को छोड़कर अकेला कहीं चला जाएगा ताकि दमयन्ती अपने मायके चली जाए। नल का यह दृढ़ विश्वास था कि पतिभक्ति के तेज से दमयन्ती का कोई अहित नहीं होगा। इसकी पतिभक्ति सब संकटों से इसके सतीत्व की रक्षा करेगी।

यह निश्चय करके नल ने अपनी नग्नता को ढकने के लिए दमयन्ती की साड़ी का आधा भाग फाड़ लेने का निश्चय किया। पर उसे लगा कि कहीं ऐसा न हो कि साड़ी फाड़ने के शब्द से उसकी नींद खुल जाए और वह उठ बैठे। राजा ने इधर-उधर दृष्टि दौड़ाई, तो तेज धारवाला एक खड्ग दिखाई दिया। नल ने उससे दमयन्ती की आधी साड़ी धीरे-धीरे काटकर अपना

शरीर ढक लिया और दमयन्ती को सोई हुई छोड़कर वहां से चुपचाप खिसक गया।

नल वहां से कुछ दूर निकल गया, तो उसे विचार आया कि उसने यह अच्छा नहीं किया। वह फिर वहीं लौट आया जहां दमयन्ती सोई पड़ी थी। वह सोई हुई दमयन्ती की दुर्दशा देखकर फूट-फूटकर रोने लगा।

आधी साड़ी में किसी तरह शरीर को ढके हुए नंगी धरती पर सोई दमयन्ती को देख नल की छाती फटने लगी—'सूर्य और वायु जिस नारी को देख नहीं पाते थे, आज वह सार्वजनिक स्थान में धरती पर अधढकी सोई हुई है। वाह रे भाग्य ! हाय ! ! जब यह जागेगी और देखेगी कि उसका प्रिय पति अपनी लज्जा ढकने के लिए उसकी आधी साड़ी को काट कर ले गया है और उसे अकेली छोड़ गया तो यह रो-रोकर पागल हो जाएगी। हाय ! यह हिंसक जानवरों से भरे जंगलों, पर्वतों और नदियों को अकेली कैसे पार करेगी और कौन इसकी रक्षा करेगा ! हे सती-साध्वी दमयन्ती ! तुम्हारा धर्म ही तुम्हारी रक्षा करेगा।' इतना कहकर नल अपनी प्राणप्रिया दमयन्ती को वहीं छोड़कर, फिर वहां से चला गया।

कलियुग के कारण राजा की बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी थी। वह बार-बार जाता और ममता से खिंचा हुआ कुछ दूर जाकर फिर लौट आता और फिर चला जाता। अन्त में जी कड़ा करके नल सोई हुई दमयन्ती को छोड़कर चला ही गया।

नल के चले जाने पर जब दमयन्ती की आंख खुली, तो उसे नल नहीं दिखाई दिया। कुछ देर तक तो वह मन को यह धीरज बंधाती रही कि कहीं आस-पास ही गए होंगे और अभी आ

जाएंगे। किन्तु जब पुकारने पर भी नल ने कोई उत्तर नहीं दिया, तो दमयन्ती ने सोचा कि संभवत: वे उसे छोड़कर कहीं चले गए हैं। फिर तो उसके दु:ख का कोई ठिकाना न रहा। वह विलाप करने लगी—"हा नाथ ! हा महाराज ! आप मुझे अकेली छोड़ कर कहाँ चले गए ? हे स्वामी ! आप मेरी पुकार का उत्तर क्यों नहीं देते। मैंने आज तक कभी भी आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया फिर भी आप मुझे छोड़कर क्यों चले गए। हाय ! इससे तो मैं मर जाती, तो अच्छा होता। दु:ख का पहाड़ टूट पड़ने पर भी मेरे यह पापी प्राण क्यों नहीं निकल रहे हैं !

"हे नाथ ! आप मेरे साथ परिहास तो नहीं कर रहे हैं। मैं अकेली डर रही हूं। आप दर्शन देकर मेरा दु:ख और भय दूर करें। हे स्वामी ! मुझे अपनी चिन्ता नहीं है। मैं तो आपके दु:ख से ही दुखी हूं। आप अकेले ही इस विपत्ति को कैसे झेलेंगे !"

इस तरह करुण विलाप करती हुई दमयन्ती रोने लगी और नल को ढूंढ़ती, इधर-उधर दौड़ने लगी। वह बार-बार गिर पड़ती और उठकर पागलों की तरह चलने लगती और फिर दहाड़ मारकर रो पड़ती। दमयन्ती रोती-बिलखती कहने लगी, "जिस पापी ने धर्मात्मा नल को इस दशा को पहुंचाया, वह उनसे भी बड़ी विपत्ति में फंसकर जीवन भर दु:ख पाए।"

इस तरह वह रोती-बिलखती, पागलों की तरह चक्कर काटती, कभी अचेत हो गिर पड़ती और फिर उठकर नल को पुकारने लगती।

इस स्थान के पास ही झाड़ी की ओट में एक विशाल अजगर छिपा बैठा था। घूमती हुई दमयन्ती जब उसके पास पहुंची, तो अजगर ने उसे पैरों की ओर से पकड़कर निगलना प्रारंभ कर दिया। दमयन्ती को अजगर द्वारा अपने खाए जाने की उतनी

चिन्ता नहीं थी, जितनी चिन्ता नल की थी। वह अपनी रक्षा के लिए बार-बार नल को पुकारने लगी।

इतने में एक शिकारी जो शिकार की खोज में उस वन में घूम रहा था, दमयन्ती की पुकार सुनकर दौड़ा आया और उसने तलवार के वार से अजगर को सिर के पास से काट डाला। दमयन्ती अजगर द्वारा पकड़ी जाने पर अचेत हो चुकी थी। व्याध ने पानी के छींटे मारकर उसे चेतना में लाने का प्रयत्न किया। जब उसकी चेतना लौट आई, तो शिकारी ने उसके घावों को धो दिया और जंगली फल-मूल खाने को दिए।

जब दमयन्ती कुछ स्वस्थ हुई तो व्याध ने पूछा, "ऐ सुन्दरी ! तुम किसकी पत्नी हो और अकेली वन में क्यों चली आई हो ? कैसे तुम इस हिंसक जानवरों से भरे जंगल में भटक रही हो ?"

व्याध के पूछने पर दमयन्ती ने अपनी पूरी राम-कहानी उसे सुना दी।

अत्यन्त रूपवती दमयन्ती के अंग आधी साड़ी में से स्पष्ट दीख रहे थे। वह राजपुत्री और राजपत्नी सुन्दरतम नारी थी और इस विपत्ति में भी उसके अंगों की शोभा चित्ताकर्षक थी। निर्जन वन प्रदेश में उसे असहाय पाकर व्याध का मन काम-वासना से भर गया। वह उससे प्रेम भरी बातें करने लगा। दमयन्ती उसके मन की बात जानकर समझ गई कि वह एक अजगर से छूटकर, दूसरे दुष्ट अजगर के चंगुल में फंस गई है। इससे तो यही अच्छा था कि अजगर ही उसे खा लेता। अपने सतीत्व पर, पतिव्रत धर्म पर संकट आया जानकर दमयन्ती का क्रोध भड़क उठा। उसके बड़े-बड़े नेत्र अंगारों की तरह धधकने लगे। उसकी भौंहें तन गईं और होंठ फड़कने लगे।

दमयन्ती क्रोध से अग्निशिखा की तरह जलने लगी। उसके

सतीत्व के तेज से भयभीत होकर व्याध को साहस नहीं हुआ कि वह बलपूर्वक उसका स्पर्श करे। फिर भी दमयन्ती को लग रहा था कि कामान्ध व्याध रोकने से रुकेगा नहीं। इसलिए अपने पतिव्रत धर्म की रक्षा के लिए दमयन्ती ने उसे शाप देने का निश्चय किया। वह बोली, "यदि मैंने अपने पति नल के सिवा किसी भी पुरुष का कभी चिन्तन न किया हो, तो यह दुष्ट व्याध अभी गिर कर मर जाए।"

दमयन्ती का वचन पूरा होते ही वह व्याध गिर पड़ा और मर गया।

इस दुष्ट से छुटकारा पाकर दमयन्ती फिर साहस बटोरकर आगे बढ़ी। यह जंगल बड़ा भयानक था। इसमें सिंह, चीते, बाघ, जंगली भैंसे, रीछ और अजगर आदि हिंसक जानवरों की भरमार थी। इसके अतिरिक्त लुटेरे और जंगली लोग भी इसमें कम नहीं थे। तरह-तरह के विशाल वृक्षों, ऊंची-नीची पहाड़ियों, खाइयों तथा गुफाओं से भरा यह जंगल बड़ा डरावना था।

दमयन्ती पति के वियोग में ऐसी मतवाली थी कि उसे किसी से भी डर नहीं लगता था। वह अपने पति नल को खोजने में और सब कुछ भूल गई थी।

दमयन्ती नल को पुकारती और खोजती। तीन दिन और तीन रातें चलती रही। उसे इस भयानक जंगल का न ओर-छोर मिला और न ही नल का कहीं पता लगा। वह नल के बारे में पागलों की तरह वृक्षों, लताओं, पर्वतों और सामने दिखने वाले जंगली पशुओं से पूछती, पर किसी से भी कोई उत्तर नहीं मिलता। अन्त में वह एक ऐसे वन प्रदेश में पहुंची जहां धर्मपरायण ऋषि-मुनियों के आश्रम थे। यहां फूल-फल वाले वृक्षों की भरमार थी और वहां वनश्री भी बड़ी मनोहर थी। यहां हिंसक जंगली जानवर भी कम थे। यहां कितने ही

ऐसे तपस्वी भी थे जो केवल जल पीकर ही रहते थे। कुछ तो केवल वायु पर ही निर्भर थे। कुछ पत्ते खाकर जीवन धारण करते थे। यहां चौकड़ी भरते मृगों और वृक्षों की शाखाओं पर उछल-कूद मचाते वानरों की भी भरमार थी। तपोधन महात्माओं के इस आश्रम में पहुंचकर दमयन्ती के व्याकुल मन को कुछ शान्ति मिली। वह आश्रम में आश्रय पाने चली गई।

दमयन्ती आश्रम के महात्माओं को प्रणाम करके, उनके पास खड़ी हो गई। उसे देखकर आश्रमवासियों ने कहा, "देवी! हम तुम्हारा स्वागत करते हैं। यहां आराम से बैठो और हमें बताओ कि हम तुम्हारे लिए क्या करें?"

दमयन्ती बोली, "तपोधन महात्माओ! आपकी तपस्या, अग्निहोत्र और धर्माचरण तो निर्विघ्न हो रहा है न? आश्रम के पशु-पक्षी तो निर्भय हैं न?"

यह पूछने पर उन महात्माओं ने कहा, "भद्रे! यहां सब कुशल है। तुम अपने बारे में बताओ कि तुम कौन हो? क्या तुम इस वन की देवी हो?"

दमयन्ती बोली—"महात्माओ! मैं विदर्भ देश के राजा भीम की पुत्री हूं और निषध देश के महाराजा नल मेरे स्वामी हैं। उनके जातिबान्धव ने उन्हें जुए में हराकर उनका सर्वस्व छीन लिया है। मेरा नाम दमयन्ती है। मैं महाराज नल को खोजती हुई भटक रही हूं। मैं उनके दर्शनों के बिना व्याकुल हूं। आप में से किसी ने उन्हें कहीं देखा हो तो कृपा कर मुझे बताएं।"

ऋषिगण बोले, "शुभे! यद्यपि हमने तुम्हारे पति नल को तो नहीं देखा है पर हम अपने तपोबल से प्राप्त दिव्यदृष्टि से देख रहे हैं कि तुम्हारा भविष्य मंगलमय है! तुम्हें शीघ्र ही पति के दर्शन होंगे। तुम्हारे संकट के दिन समाप्त होने वाले हैं। तुम्हारे

का शीघ्र ही मिलन होगा।"

इतना कहकर वे सभी तपस्वी और उनका वह आश्रम अदृश्य हो गया। इस अद्भुत घटना को देखकर दमयन्ती के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह सोचने लगी—'कुछ देर पहले मैंने आश्रम में जो ऋषिगण देखे, क्या वह स्वप्न था? यदि स्वप्न नहीं था तो वह आश्रम और तपस्वी कहां लुप्त हो गए? फूलों और फलों से भरे वे वृक्ष क्षण भर में कहां चले गए?"

वह कुछ क्षण इसी पहेली को सुलझाने में उलझी रही पर उसकी समझ में कुछ नहीं आया। फिर वह वहां से आगे चल दी और विलाप करने लगी। कुछ आगे बढ़ने पर उसे एक सुन्दर अशोक-वृक्ष दिखाई दिया। वह अशोक-वृक्ष के नीचे जाकर उससे विनयपूर्वक बोली—"हे अशोक! तुम मुझे निषध-राज नल का समाचार सुनाकर मेरा शोक दूर कर दो।" यह कहते हुए वह अशोक वृक्ष की परिक्रमा करती रही पर उसका शोक दूर नहीं हुआ। निराश होकर वह फिर आगे चल पड़ी और दूर निकल गई।

आगे जाकर उसने नदी को पार करते व्यापारियों के दल को देखा। उनके साथ भार से लदे घोड़े, रथ तथा सवारी के हाथी थे। बीहड़ वनों में अकेले भटकने की अपेक्षा उसने उस व्यापारी दल के साथ चलने का निश्चय किया। वह कुछ तेज चलती हुई व्यापारियों के उस दल में जा मिली।

पति-वियोग से दुःखित, भूख-प्यास से व्याकुल, रूखे, धूल भरे केशों और आधी साड़ी पहनी होने के कारण वह पगली-सी दिखाई देती थी।

उसे देखकर कई लोग तो डर के मारे चीख पड़े, कुछ इधर-उधर भागने लगे और कुछ चिन्ता में पड़ गए। कुछ लोग उसकी

खिल्ली उड़ाने लगे, कुछ को वह अच्छे चरित्र की स्त्री नहीं लगी और कुछ उसकी दशा देखकर दया से भर गए और उन्होंने उससे पूछा—"कल्याणि ! तुम कौन हो ? किसकी पत्नी हो और इस वन में किसको खोज रही हो ? तुम्हारी बुरी दशा देखकर हमें बड़ा दुःख हो रहा है। यदि इस वेश में तुम कोई देवी, यक्षी या राक्षसी हो, तो हमें मंगल-आशीर्वाद दो। हमारा यह दल कुशल-पूर्वक अपने स्थान पर पहुंच जाए, ऐसा वरदान दो।

दमयन्ती ने उन्हें उत्तर दिया, "मैं आप ही की तरह मानवी हूं, देवी या यक्षी नहीं। मैं राज-पुत्री और यशस्वी राजा की पत्नी हूं। अपने पति को खोजती इस वन में भटक रही हूं। मैं विदर्भराज भीम की पुत्री और निषध-नरेश नल की पत्नी हूं। यदि आपने महाराज नल को कहीं देखा हो या उनके बारे में कुछ सुना हो तो मुझे बताने की कृपा करें।"

उस दल के नेता का नाम शुचि था। उसने दमयन्ती से कहा, "भद्रे ! मैं इस दल का नेता और संचालक हूं। हमने नल नामक किसी मनुष्य को मार्ग में नहीं देखा। इस जंगल में हमें तुम्हारे सिवा कोई भी मानव कहीं दिखाई नहीं दिया।"

दमयन्ती ने उससे पूछा, "कृपा करके बताइए कि आपका यह दल किस नगर की ओर जा रहा है।"

दल के नेता ने उत्तर दिया, "हमारा दल चेदिराज सुबाहु की राजधानी में व्यापार के उद्देश्य से जा रहा है।"

यह सुनकर दमयन्ती भी उनके साथ हो ली।

जब चलते-चलते कई दिन बीत गए, तो एक विशाल वन में पहुंचकर दल के नेता ने एक बड़ा सरोवर देखा। उसके आस-पास पशुओं के चरने के लिए बहुत-सी हरी-भरी घास थी और लकड़ियों की भी कमी नहीं थी। पानी के कारण फल-मूल भी काफी थे। सरोवर का पानी निर्मल और मीठा था। थके हुए

व्यापारियों ने वहीं डेरा डालने का निश्चय किया।

सब लोग खा-पीकर सो गए और थकान के कारण गहरी नींद में डूब गए। कोई एक पहर रात बीत जाने पर जंगली हाथियों का एक बड़ा झुंड पानी पीने के लिए उस सरोवर पर आया। उन व्यापारियों के के पालतू हाथियों को देखकर जंगली हाथी क्रोध से भर गए। उन्होंने पालतू हाथियों को मार डालने के उद्देश्य से उन पर आक्रमण कर दिया। व्यापारियों के हाथी जंजीरों से बंधे हुए थे। जंगली हाथियों के उन पर टूट पड़ने से, व्यापारी हाथियों के पैरों के नीचे कुचल कर मर गए। कुछ बचकर जंगल की ओर भाग गए। कुछ को हाथियों ने सूंडों से उठाकर दूर फेंक दिया। घोड़े भी मारे गए। रथ टूट गए।

जंगली हाथियों के इस अचानक आक्रमण से व्यापारियों का दल प्रायः नष्ट हो गया। घायलों की चीख-पुकार और हा-हा-कार से वह अंधेरी काल-रात्रि और भी डरावनी लगने लगी।

वहां व्यापारियों का सामान, सोने की मोहरें, हीरे-मोती और दूसरी बहुमूल्य वस्तुएं बिखरी पड़ी थीं, किन्तु कोई भी उन्हें उठानेवाला नहीं था। आक्रमण होने पर जब दमयन्ती की नींद खुली, तो वह स्तब्ध रह गई। वह व्यापारियों के दल से कुछ हटकर एक ओर सोई हुई थी। उस ओर हाथी नहीं गए थे। वह सांस रोके, धरती से हटकर पड़ी रही और इस भयानक नर-संहार को देखती रही। उसने ऐसी दुर्घटना नहीं देखी थी।

जब जंगली हाथी वहां से चले गए, तो दल के बचे हुए लोग जो इधर-उधर भाग गए थे, इकट्ठे होकर अपने-अपने भाग्य को कोसने लगे। कोई कहता कि हम जब यात्रा पर चले थे तभी अपशकुन होने लगे थे। कोई कहता कि हमने धन के देवता कुबेर का भली प्रकार पूजन नहीं किया, तभी तो यह विपत्ति आई। इस तरह कोई कुछ और कोई कुछ कह रहा था। किसी ने कहा

कि कुछ दिन पूर्व वह जो एक स्त्री हमारे दल में आ मिली थी, लगता है वह कोई छलना थी। उसी राक्षसी के कारण यह सब कुछ हुआ है। उसी मायाविनी ने अपनी माया से यह सब कुछ किया। अब यदि वह हमें मिल जाए तो हम उसे पत्थरों और ढेलों से मार-मार कर धरती पर सुला दें।

उनकी ये बातें सुनकर दमयन्ती लज्जा से गड़ गई और भय से कांपने लगी। उसने सोचा कि यदि मैं इनकी दृष्टि में पड़ जाऊंगी, तो ये मुझे मार डालेंगे। वह तुरंत घने जंगल की ओर भाग खड़ी हुई।

यह सोचकर साध्वी दमयन्ती के दुःख का ठिकाना न रहा कि वह बड़ी भाग्यहीन है। पता नहीं पूर्वजन्म में ऐसे कौन-से पाप किए हैं कि सभी मेरे वैरी बन रहे हैं। यदि व्यापारियों के दल पर संकट न आता, तो कम-से-कम मैं उनके साथ चलती हुई, निर्भय नगर में पहुंच जाती। पता नहीं, मेरे दुःखों का अन्त कब होगा। मेरे प्राण निकल जाते, तो मैं इस दुःख-भोग से तो बच जाती। मुझे लगता है कि देवताओं को छोड़कर जो मैंने नल को अपना पति चुना, उसी के कारण देवगण मुझ पर कुपित हैं।

कुछ दूर चलने पर हाथियों के कुचलने से बचे हुए कुछ विद्वान् ब्राह्मण उसे मिल गए। वह उन्हीं के साथ चलने लगी और कुछ दिनों बाद चेदिराज सुबाहु की राजधानी में जा पहुंची।

वह आधी साड़ी में किसी तरह लिपटी हुई भूखी, दुबली और मैली-कुचैली होने के कारण पगली-सी लग रही थी। कई बालक उसे पगली समझकर कुतूहलवश उसके पीछे हो लिए। यों ही चलती हुई दमयन्ती राजमहल के आगे वाले राजमार्ग पर जा निकली।

खिड़की से राजमार्ग की ओर देख रही थी। दयावती राजमाता ने अपनी दासी को कहा कि इस स्त्री को मेरे पास ले आओ। बालक इसे तंग कर रहे हैं। मुझे लगता है कि यह कोई संकट में पड़ी हुई सती-साध्वी है।

दासी बच्चों को भगाकर, दमयन्ती को राजमाता के पास ले आई।

राजमाता ने जब दमयन्ती को भली प्रकार देखा तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा। वह बोली, 'भद्रे ! तुम इस दीन-हीन दशा में भी कितनी सुन्दर लग रही हो। संकटों से घिरी होने पर भी तुम, मेघों से घिरी बिजली की तरह तेजस्विनी हो। अच्छा, यह बताओ कि तुम कौन हो ? किसकी पत्नी हो ? किस कारण तुम मारी-मारी भटक रही हो ?''

राजमाता की बात सुनकर दमयन्ती ने उत्तर दिया, ''माते ! मैं विपत्ति में पड़े अपने पति की खोज में दर-दर भटक रही हूं। वे जुए में अपना सब कुछ हारकर जंगल में चले गए थे और मैं भी उनके साथ थी। फिर वे मुझे सोती हुई छोड़कर अकेले ही कहीं चले गए हैं। मैं उन्हें ही खोजती हुई भटक रही हूं। फल-मूल खाकर पेट भरती हूं और रात को किसी वृक्ष के नीचे सो रहती हूं। मैं राजघराने में प्रसाधिका का काम करती थी। मैं राज-परिवार की नारियों का शृंगार करने में चतुर हूं।''

उसकी दुःखभरी कहानी सुनकर राजमाता का हृदय भर आया। वह बोली, ''भद्रे ! तुम आज से मेरे पास रहो। तुम्हारे पति की खोज के लिए मैं अपने सेवक भेज दूंगी। वे उसे अवश्य खोज लाएंगे और एक दिन तुम्हारा उससे अवश्य मिलन होगा।''

राजमाता की बात सुनकर दमयन्ती ने कहा, ''मेरी कुछ

शर्तें हैं। यदि आप उन्हें मान लें, तो मैं आपके पास रह सकती हूं। मैं कभी किसी का जूठा नहीं खाऊंगी। कभी किसी के पैर नहीं धोऊंगी और किसी दूसरे पुरुष से बात नहीं करूंगी। यदि कोई पुरुष मुझे कुदृष्टि से देखे, तो आपको उसे दण्ड देना होगा। और यदि वह बार-बार ऐसा अपराध करे, तो उसे प्राणदण्ड देना होगा। मैं अपने पति की खोज-खबर के लिए ब्राह्मणों से बात कर सकती हूं। मेरी ये शर्तें यदि आप मान लें, तो मैं यहां रह सकती हूं।"

राजमाता ने उसकी सारी शर्तें मान लीं और उसे अपने पास रख लिया। फिर राजमाता ने अपनी पुत्री सुनन्दा को बुलाकर कहा, "सुनन्दे! इस प्रसाधिका को तुम अपनी सखी ही समझो। इसके साथ मौज से रहो।"

सुनन्दा बड़े प्रेम से दमयन्ती को अपने साथ अपने भवन में ले गई। दमयन्ती के लिए सुनन्दा ने पूरी सुख-सुविधा जुटा दी। इतने दिनों से तरह-तरह के दुःख-संकट भोग रही दमयन्ती ने यहां आकर सुख की सांस ली।

●

दूसरी ओर, जब नल दमयन्ती को छोड़कर जंगल में दूर चला गया तो उसने जंगल में आग लगी देखी। उस आग में से कोई नल का नाम लेकर पुकार रहा था—"महाराज नल! दौड़कर आइए और मुझे इस आग से निकालिए।"

इस करुण पुकार को सुनकर नल ने कहा, "डरो मत, मैं आ रहा हूं।" इतना कहकर वह किसी तरह अपने को बचाता आग में घुस गया। नल ने आगे देखा कि एक नाग आग से झुलसा हुआ कुण्डली मारे पड़ा था। वह बोला, "राजन्! मैं कर्कोटक नामक नाग हूं। एक बार मेरे द्वारा देवर्षि नारद ठगे गए थे,

तब उन्होंने मुझे शाप दिया था कि तुम जड़ वस्तु की तरह एक जगह पड़े रहो। जब कभी राजा नल तुम्हें यहां से दूसरी जगह ले जाएंगे, तब तुम्हारे शाप का अन्त होगा। नारद जी के उस शाप के कारण मैं अपनी जगह से इधर-उधर नहीं जा सकता। आप मुझे इस आग से बचाइए। इस उपकार के बदले मैं भी आपका एक काम बनाऊंगा। बस, आप जल्दी से मुझे यहां से निकालिए।"

नल ने कर्कोटक नाग को उठाया और शीघ्रता से आग से बाहर ले आया। जब उस नाग की जान बच गई, तो उसने नल से कहा, "आप अपने पग गिनते हुए चलिए, मैं आपकी भलाई के लिए एक उपाय करूंगा।"

राजा नल नाग की बात मानकर अपने पग गिनता हुआ आगे को चला। एक-दो-तीन गिनते हुए जब नल ने 'दस' कहा तो कर्कोटक नाग ने नल को पीछे से डस लिया। नाग के डसते ही नल का गोरा रंग एकदम काला हो गया।

अपने को काला-कुरूप हुआ देखकर नल को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने नाग की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा तो नाग बोला, "राजन्! मैंने आपकी भलाई के लिए ही आपका रंग बदला है। अब कोई आपको पहचान नहीं सकेगा। और मेरे विष के प्रभाव से, आपके शरीर में घुसा बैठा कलियुग हर समय जलता रहेगा। उसने आपको घोर कष्ट दिया है, अब वह कष्ट पाएगा। मेरी कृपा के कारण आपको तीखे दांतों वाले जीव-जन्तुओं से कभी खतरा नहीं होगा। साथ ही ब्राह्मणों के शाप से भी आप बचे रहेंगे। आपको किसी विष से भी कष्ट नहीं होगा। युद्ध में आप सदा विजयी होंगे। अब आप यहां से राजा ऋतुपर्ण के पास चले जाइए और अपने को बाहुक नामक सारथी बताइए। अयोध्या के पति राजा ऋतुपर्ण जुए की विद्या के

जानकार हैं। उन्हें घोड़े हांकने की विद्या सिखाकर उसके बदले जुए की विद्या सीख लेना। उनसे आपकी मित्रता हो जाएगी। तभी आपके बुरे दिन समाप्त होंगे। आपको अपना खोया हुआ राज्य, पत्नी और सन्तान सभी कुछ मिल जाएगा। हां, एक बात और ध्यान में रखिए, जब आप अपने पहले वाले सुन्दर रूप को देखना चाहें तो उस समय मुझे याद कीजिए और मेरे दिए हुए ये दो दिव्य वस्त्र पहन लीजिए। ऐसा करने पर आपका पहले वाला सुन्दर गौर वर्ण आपको प्राप्त हो जाएगा।

कर्कोटक नाग के कहे अनुसार नल वहां से अयोध्या की ओर चल पड़ा और दसवें दिन वहां पहुंच गया।

राजा ऋतुपर्ण के दरबार में उपस्थित होकर नल ने कहा, "राजन्! मैं बाहुक नामक सारथी हूं और घोड़े हांकने की विद्या में मेरा जैसा दूसरा आपको खोजने पर भी नहीं मिलेगा। आजकल मैं रुपये-पैसे से खाली हूं। यदि आपके यहां मुझे काम मिल जाए, तो मैं और भी कई काम कर सकता हूं। मेरे हाथ का बना भोजन जो एक बार चख लेता है, उसे दूसरे के हाथ का बना भोजन स्वादिष्ट नहीं लगता। संगीत, चित्र, साहित्य आदि विविध कलाओं में आप चाहें तो मैं आपको अच्छी सलाह दे सकता हूं। मेरी सभी कलाओं में अच्छी गति है। संक्षेप में, यों समझिए कि मैं कठिन-से-कठिन कामों को भी कर सकता हूं। आप मुझे अपनी सेवा का अवसर दीजिए और फिर देखिए कि मैं आपके लिए कितना उपयोगी सिद्ध होता हूं।"

राजा ऋतुपर्ण बाहुक की बातें सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। ऐसे गुणी आदमी को कौन नौकरी नहीं देना चाहेगा! ऋतुपर्ण ने उसे नौकर रख लिया और कहा कि मैं सदा तेज चाल पसन्द

करता हूं। हवा से बातें करते घोड़े और तेज दौड़ता रथ मुझे सदा आकर्षित करते हैं। तो आज से तुम हमारी घुड़साल के अध्यक्ष हुए। दस हजार मुद्राएं वार्षिक वेतन तुम्हें मिलेगा। और भी जो सुविधाएं तुम चाहोगे, तुम्हें मिलेंगी। हमारे ये दो सारथी वार्ष्णेय और जीवक तुम्हारे सहायक होंगे।"

बाहुक के रूप में नल ऋतुपर्ण की घुड़साल का अध्यक्ष बनकर अयोध्या में रहने लगा। भूख-प्यास और ओढ़ने-पहनने की कठिनाई तो दूर हो गई पर नल क्षण भर के लिए भी दमयन्ती की याद को नहीं भुला पाता। दमयन्ती की स्मृति कांटे की कसक की तरह चुभती रहती। जब सांझ घिर आती तो नल की व्याकुलता भी बढ़ जाती। वह प्रतिदिन सांझ के समय एक छन्द पढ़ता:

भूखी-प्यासी, पीड़ित और थकी-मांदी।
पति-वियोग से दुःखी अकेली हतभागी।
सोती होगी कहां, कहां रहती होगी,
बच्चों की ममता से आहत, पति को क्या कहती होगी॥

एक दिन सांझ को नल जब इस छन्द को दोहरा रहा था तो उसके सहायक जीवक ने पूछा, "बाहुक! तुम्हें हर सांझ को किस स्त्री की याद सताती है? हमें भी तो कुछ बताओ।"

तब नल ने कहा, "बड़ी करुण कहानी है। सुनकर तुम्हारा भी जी भर आएगा। एक भला आदमी था और बहुत ही भली उसकी पत्नी थी। दोनों में प्रेम भी खूब था। बड़े सुख से उनके दिन बीत रहे थे। भाग्य ने पलटा खाया। उन दोनों को घर से निकलना पड़ा। वे जंगलों में भटकने लगे और फल-मूल खाकर अपने दिन काटने लगे। एक दिन वह पुरुष पतिव्रता पत्नी को जंगल में सोती छोड़कर कहीं चला गया। बाद में अपने इस

काम के लिए उसे बड़ा पछतावा हुआ। अब वह दिन-रात अपनी पत्नी के दुःख की बात सोचकर दुःखी रहता है। जो पतिव्रता संकट में पति के पीछे-पीछे वन में चली गई, उस कठोर-हृदय पुरुष ने उसे ही जंगल में अकेला छोड़ दिया। दुष्ट ने यह भी नहीं सोचा कि हिंसक जानवरों से भरे इस बीहड़ जंगल में यह नारी कैसे तो जीवित बचेगी और मार्ग का पता न होने से कैसे जंगल से बाहर निकलेगी ! क्या खाएगी और कैसे अपना जीवन बचाएगी। वह आदमी अपने इस नीच काम की याद करके सदा पश्चाताप की आग में जलता रहता है।"

जीवक ने इस दुःख भरी कहानी को सुनकर लम्बी सांस ली। उसकी आंखें गीली हो गई थीं।

दमयन्ती के पिता विदर्भराज भीम को जब पता लगा कि राजा नल जुए में सब कुछ हारने के बाद दमयन्ती सहित वन को चले गए हैं, तो उसने उन्हें खोजने के लिए बहुत से ब्राह्मणों को इधर-उधर भेजा। राजा ने ब्राह्मणों से कहा कि जो मेरी पुत्री और जंवाई का पता लगाएगा, उसे एक हजार गौएं दी जाएंगी। बड़ी उपजाऊ, करमुक्त भूमि भी दूंगा। जो भी नल-दमयन्ती को, या दोनों में से एक को लेकर आएगा या उनका पूरा पता-ठिकाना बताएगा, उसे यह पुरस्कार मिलेगा।

वे भूख-प्यास वाले ब्राह्मण नल-दमयन्ती को खोजने चारों दिशाओं में चले गए। बहुत खोजने पर भी किसी को नल-दमयन्ती का कुछ पता नहीं लगा।

उनमें से सुदेव नाम का ब्राह्मण खोजता हुआ जब चेदिराज के महल में गया, तो वहां उसने दमयन्ती को देखा। वह सुनन्दा के साथ खड़ी थी। धुएं से घिरी ज्वाला की तरह उसका रूप पूरी

तरह प्रकट नहीं हो रहा था। वह चिन्ता के कारण उदास, दुर्बल और मलिन थी। सुदेव अब उसके पास चला गया और बोला, "विदर्भ राजकुमारी ! मैं तुम्हारे भाई का मित्र सुदेव हूं। महाराज भीम ने मुझे तुम्हारी खोज के लिए भेजा है। तुम्हारे माता-पिता और भाई सब सकुशल हैं और वहां जो तुम्हारे पुत्र-पुत्री हैं, वे भी सकुशल हैं। तुम्हारा और महाराज नल का कुछ पता-ठिकाना न होने के कारण वे बहुत चिन्तित और दुखी हैं। तुम दोनों को खोजने के लिए उन्होंने सैकड़ों ब्राह्मण चारों दिशाओं में भेजे हैं।"

दमयन्ती ने भी सुदेव को पहचान लिया और अपने सम्बन्धियों का कुशल-मंगल पूछने लगी।

मायके के इस ब्राह्मण से बातें करते-करते दमयन्ती का दिल भर आया और आंसू बहने लगे। सुनन्दा उसे रोती देखकर घबरा गई और राजमाता से जाकर बोली—"प्रसाधिका एक ब्राह्मण से बातें कर रही है और बहुत रो रही है।" राजामाता तुरन्त वहां पहुंची और सुदेव को बुलाकर पूछने लगी, "विप्रवर ! मैं समझती हूं, तुम इस युवती से अच्छी तरह परिचित हो। हमें भी बताओ, यह किसकी पुत्री तथा किसकी पत्नी है ? यह सुन्दरी अपने सम्बन्धियों से कैसे बिछुड़ गई है और किस संकट से ग्रस्त है ?"

राजमाता के इस तरह पूछने पर विप्रवर सुदेव ने दमयन्ती का पूरा परिचय उसे दिया।

परिचय मिलते ही राजमाता और सुनन्दा दमयन्ती से गले मिलकर रोने लगीं। बात यह थी कि दमयन्ती राजमाता की सगी बहन की पुत्री थी। उनका मौसी-भानजी का सम्बन्ध था। अब तो राजमाता ने पिछली बहुत-सी बातें बतानी प्रारंभ कीं और बोली कि तुम्हारा जन्म तो तुम्हारे नाना और मेरे पिता के

घर ही हुआ था। अरी भोली ! यह घर तो तेरा अपना ही है।''

अब दमयन्ती बोली, ''मौसीजी, आप मुझे पहचानती नहीं थीं, फिर भी आपने मेरे लिए सारी सुख-सुविधाएं जुटा दीं। मैं यहां सुरक्षित रूप से रहती रही। मैं बहुत दिनों से भटक रही थी और दुःख पा रही थी। आपने मुझे आश्रय देकर संकट से बचाया। अब मुझे विदर्भ जाने की आज्ञा दीजिए। मेरे लिए माता-पिता और भाई सभी चिन्तित हैं। मेरे दो बच्चे भी वहीं हैं। माता-पिता की याद करके शोकाकुल रहते होंगे। अब तो आप किसी अच्छी-सी सवारी की व्यवस्था कर दें ताकि मैं जल्दी से विदर्भ पहुंच सकूं।''

राजमाता ने दमयन्ती के लिए पालकी की व्यवस्था कर दी और सुरक्षा के लिए एक सैनिक-दल भी साथ भेज दिया। खाने-पीने की और दूसरी आवश्यक वस्तुएं भी साथ भेज दीं जिससे मार्ग में किसी प्रकार का कष्ट न हो।

दमयन्ती कुछ दिनों बाद विदर्भ देश में अपने माता-पिता के पास जा पहुंची। उसके मायके के लोग उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुए और सबने उसका आदर-सत्कार किया। दमयन्ती भी उन्हें छाती से लगाकर बड़ी देर तक प्यार करती रही ! इसके बाद दमयन्ती ने देवताओं और ब्राह्मणों का पूजन किया।

राजा भीम ने पुत्री को खोज लानेवाले ब्राह्मण को एक हजार गौएं, एक गांव, करमुक्त भूमि और धन देकर विदा किया।

दूसरे दिन दमयन्ती ने अपनी माता से कहा, ''मां, यदि तुम मुझे जीवित देखना चाहती हो, तो अपने जंवाई की खोज कराने का एक और प्रयत्न करो। सच कहती हूं, मैं उनके बिना जीवित नहीं रहूंगी।''

बेटी की बात सुनकर मां की आंखें भर आईं। रानी ने दमयन्ती को कोई उत्तर नहीं दिया। वह मन में कुछ सोचती

रही। फिर रानी ने यह बात राजा भीम को बताई और नल को खोजने के लिए दोबारा प्रयत्न करने को कहा।

पुत्री के दुःख से दुखी राजा भीम ने नल की खोज के लिए ब्राह्मणों को दोबारा चारों दिशाओं में जाने को कहा।

नल की खोज के लिए जाने वाले ब्राह्मण दमयन्ती के पास जाकर बोले, "राजकुमारी जी ! हम महाराज नल को खोजने जा रहे हैं। आपको कुछ कहना हो तो कहें।"

दमयन्ती ने कहा, "हां, मुझे एक बात कहनी है। जहां कहीं भी आप लोगों की भीड़ देखें, वहां मेरी बताई यह बात कहें :

प्रियतम छलिए !
आधी साड़ी पहने मुझको
वन में सोई हुई छोड़कर कहां गए तुम !
मैं वैसी की वैसी, जैसी छोड़ गए थे।
ओ पत्थर-दिल ! पतिव्रता से क्यों मुंह मोड़ गए थे।
आग विरह की मेरी छाती दग्ध कर रही.
तेरे दर्शन की आशा से नहीं मर रही।
उत्तर दो मेरी बातों का, मेरे मन के मीत !

" ब्राह्मणो ! यह कहकर आप महाराज को खोजने का प्रयत्न करें। जो व्यक्ति इस बात को सुनकर व्याकुल हो उठे, आंसू बहाने लगे या कुछ उत्तर दे, तो उससे विशेष रूप से पूछ-ताछ करना।"

दमयन्ती की बात सुन-समझकर ब्राह्मण नल को खोजने निकल पड़े। वे चारों दिशाओं में खोजते-खोजते थक गए पर राजा नल का कुछ पता नहीं चला।

बहुत दिनों बाद पर्णाद नामक ब्राह्मण लौटकर दमयन्ती के पासआया और बोला, "मैंने अयोध्या के राजा ऋतुपर्ण की

राजसभा में तुम्हारा कहा हुआ सुनाया पर किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। वहां से जब मैं लौटने लगा तो बाहुक नाम वाले एक व्यक्ति ने एकान्त में मुझे तुम्हारी बातों का उत्तर दिया। वह व्यक्ति महाराज ऋतुपर्ण का मुख्य सारथी है। वह देखने में काला-कलूटा है। घोड़ों को हांकने में वह बड़ा कुशल है और उसके बनाए भोजन में अद्‌भुत स्वाद होता है। वह लम्बे सांस लेकर आंसू बहाता रहा और मुझसे कुशल-समाचार पूछकर बोला—'उत्तम कुल की नारियां संकट में पड़ने पर भी अपने शील की रक्षा करती हैं। उन्हें अपने पतियों पर क्रोध नहीं आता। पक्षियों ने जिसका एकमात्र वस्त्र तक हर लिया था, और जो घोर संकट के कारण अपना विवेक खो चुका था, उस पर तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिए। मुझे क्षमा कर दो और मुझ पर क्रोध न करो।'

"बाहुक का यह उत्तर सुनकर मैं तुरन्त यहां चला आया हूं। अब आप ही निश्चय करें कि क्या करना उचित होगा। और उचित समझें तो महाराज को भी ये बातें बता दें।"

पर्णाद की ये बातें सुनकर दमयन्ती की आंखों से आंसुओं की धारा बहने लगी। वह एकान्त में अपनी माता से जाकर बोली, "मैं महाराज नल को यहां बुलाने का एक उपाय करना चाहती हूं। पर पिताजी को इसका पता नहीं लगना चाहिए। मैं सुदेव ब्राह्मण को ऋतुपर्ण की राजधानी अयोध्या में भेजना चाहती हूं।"

फिर उसने पर्णाद को बहुत-सा धन देकर विदा किया और वचन दिया कि जब महाराज नल आ जाएंगे तब और भी दूंगी।

फिर उसने सुदेव को बुला भेजा और माता के सामने ही कहा, "सुदेवजी ! आप पंछी की तरह उड़कर अयोध्या नगरी

में जाइए और वहां के राजा ऋतुपर्ण से कहिए कि राजा भीम की राजकुमारी दमयन्ती दोबारा स्वयंवर करेगी। वहां सभी राजा-राजकुमार आ रहे हैं। स्वयंवर कल ही होगा। यदि आपके लिए कल दिन निकलने तक विदर्भ पहुंचना संभव हो तो पहुंचिए। दमयन्ती कल सूर्योदय के बाद दूसरे पति का वरण करेगी। कारण यह है कि निषधराज नल के जीवित या मृत होने का कोई समाचार नहीं है।''

ब्राह्मण सुदेव ने दमयन्ती के बताए अनुसार जाकर सारी बात महाराज ऋतुपर्ण को बता दी।

सुदेव से स्वयंवर का समाचार पाकर राजा ऋतुपर्ण ने तुरन्त बाहुक को बुला भेजा। उसके आ जाने पर राजा ने कहा, ''बाहुक ! एक ऐसा काम आ पड़ा है, जिसमें मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है। इस अवसर पर मैं तुम्हारे अश्व-चालन के कौशल को देखना चाहता हूं। बात यह है कि विदर्भ की राजकुमारी दमयन्ती का दोबारा स्वयंवर हो रहा है। कल सूर्योदय के बाद वह दूसरे पति का वरण करेगी। अब तुम ऐसा उपाय करो कि मैं कल सूर्योदय तक विदर्भ पहुंच सकूं। बोलो, पहुंचा दोगे न ?''

राजा ऋतुपर्ण की बात सुनकर नल की छाती फटने लगी। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि दमयन्ती जैसी पतिव्रता नारी दूसरे पति का वरण कर सकती है। वह चिन्ता में डूबकर तरह-तरह की बातें सोचने लगा। फिर उसके मन में विचार आया कि सम्भवत: मुझे प्राप्त करने के लिए ही दमयन्ती ने यह उपाय सोचा है। यह भी हो सकता है कि मैं उसे धोखा देकर, जंगल में अकेली छोड़कर चला आया था, इसलिए मेरी ओर से

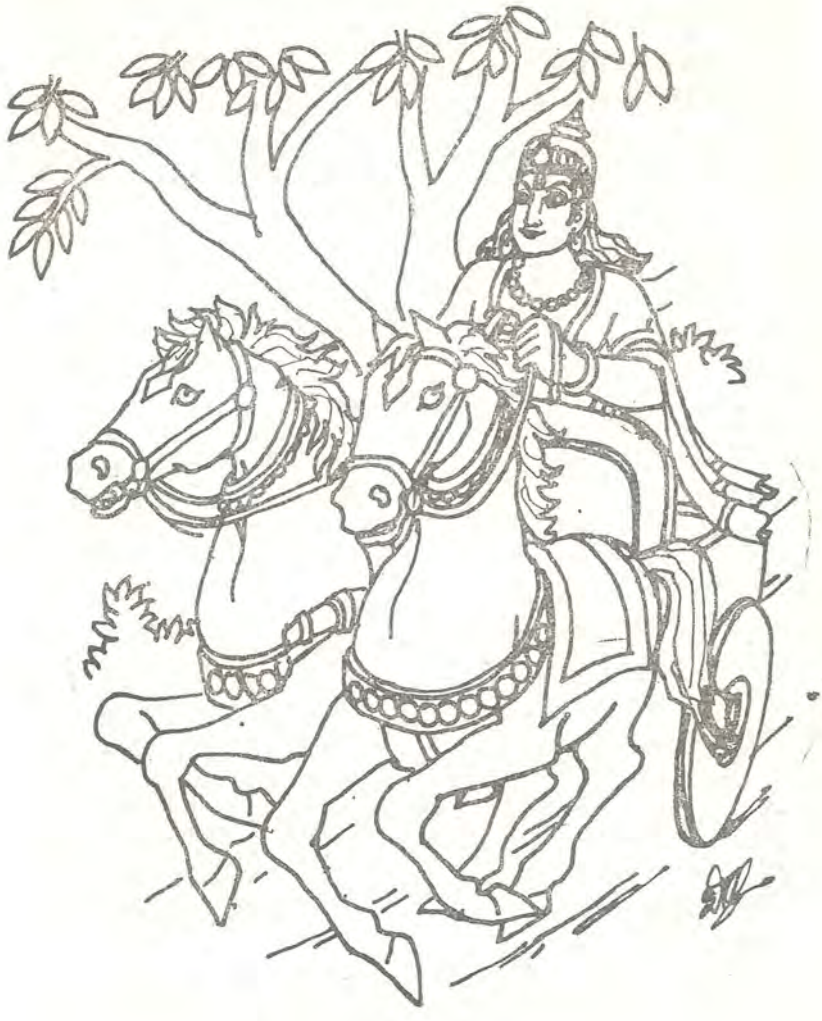

दमयन्ती का मन फिर गया हो। स्त्रियों का मन बड़ा चंचल होता है। मेरा कुछ भी पता-ठिकाना न होने से ही वह ऐसा कर रही होगी। पर वह दो बच्चों की मां है। अब इस उमर में वह दूसरे पति की इच्छा क्यों करेगी ! खैर, जो भी होगा, देखा जाएगा। राजा ऋतुपर्ण के साथ वहां जाकर सच-झूठ का पता चल जाएगा। एक पन्थ, दो काज। ऋतुपर्ण की इच्छा भी पूरी हो जाएगी और मेरा संशय भी मिट जाएगा।

मन में यह सोचकर बाहुक ने दोनों हाथ जोड़कर राजा ऋतुपर्ण से निवेदन किया, "महाराज ! मैंने आपकी आज्ञा सुन ली है। मैं आपको ठीक समय पर विदर्भ पहुंचा दूंगा। आप निश्चिन्त रहें।"

राजा ने रथ तैयार करने को कहा, बाहुक बढ़िया घोड़े छांटने के लिए घुड़साल में पहुंचा। उसने देखने में दुबले किन्तु दौड़ने में तेज, बढ़िया जाति के घोड़ों को चुना। इन घोड़ों की नाक मोटी और ठोड़ी चौड़ी थी। सिन्धु देश के ये घोड़े हवा से बातें करने वाले थे। उनके शरीर पर जगह-जगह बालों में भंवरियां थीं। प्रत्येक घोड़े में कम-से-कम दस भंवरियां थीं।

राजा ऋतुपर्ण ने इन दुबले-पतले घोड़ों को देखा, तो उसे क्रोध आ गया। उसने बाहुक से कहा, "ये कैसे बेकार घोड़े तुमने चुने हैं। तुम मुझे धोखा देना चाहते हो ! इतना लम्बा मार्ग इतने कम समय में ये घोड़े कभी भी तय नहीं कर सकते।"

बाहुक ने कहा, "राजन् ! मैंने अपनी समझ के अनुसार ठीक घोड़े चुने हैं। ये आप को ठीक समय पर विदर्भ पहुंचा देंगे। यदि ये घोड़े आपको पसन्द नहीं हैं, तो जिन्हें आप बताएं, उन्हें जोत दूंगा।"

ऋतुपर्ण ने कहा, "मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता। तुम्हीं इस विद्या को जानते हो, जैसा ठीक समझो वैसा करो।"

तब बाहुक ने चार वंशाली घोड़ों को रथ में जोता। राजा ऋतुपर्ण बड़ी उतावली के साथ रथ पर सवार हुए। इसलिए उनके चढ़ते ही वे उत्तम घोड़े घुटनों के बल धरती पर गिर पड़े।

बाहुक ने उन घोड़ों को पुचकार कर खड़ा किया और रथ हांकने लगा। जब रथ पूरी गति से दौड़ने लगा, तो राजा ऋतुपर्ण के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, उसे लगा कि घोड़े दौड़ नहीं, उड़ रहे हैं। बाहुक की घोड़े हांकने की विद्या पर ऋतुपर्ण मुग्ध हो गया।

बाहुक ने अपने सहायक वार्ष्णेय को भी साथ ले लिया था। वही पहले नल का सारथी था और नल के पुत्र-पुत्री को कुण्डिनपुर छोड़कर ऋतुपर्ण के पास नौकर हो गया था। वार्ष्णेय सोचने लगा—'इस धरती पर राजा नल ही इस कला में निपुण थे। कहीं बाहुक के रूप में ये राजा नल ही तो नहीं हैं। पर राजा नल का रूप तो अत्यन्त सुन्दर है। वह बाहुक से कुछ भारी शरीर के भी हैं। किंतु अवस्था तो दोनों की एक जैसी ही है। कौन जाने, वेश बदले हुए ये राजा नल ही हों।'

राजा ऋतुपर्ण को पूरा विश्वास हो गया कि बाहुक ठीक समय पर विदर्भ पहुंचा देगा।

मार्ग तेजी से कटने लगा। नदियों, पर्वतों, वनों और सरोवरों को लांघता हुआ रथ आगे बढ़ता गया। रथ के तेज दौड़ने से वायु के वेग के कारण राजा ऋतुपर्ण का उत्तरीय गिर गया।

राजा ने तुरन्त बाहुक को रथ रोकने के लिए कहा ताकि उत्तरीय को उठाया जा सके।

राजा की बात सुनकर बाहुक ने उत्तर दिया, "महाराज ! आपका उत्तरीय बहुत दूर रह गया। हम उस जगह से चार

कोस आगे निकल आए हैं। अब वह नहीं मिल सकता।"

बाहुक का उत्तर सुनकर राजा ऋतुपर्ण चुप हो गए।

आगे मार्ग में राजा को बहेड़े का एक विशाल वृक्ष दिखाई दिया। उस वृक्ष को दिखाते हुए ऋतुपर्ण ने कहा, "जैसे तुम्हारी घोड़े हांकने की कला अद्भुत है, ऐसे ही गिनती करने की विद्या में मैं भी विशेष योग्यता रखता हूं। सभी बातें सभी लोग नहीं जानते। कोई किसी बात को जानता है तो कोई किसी दूसरी बात को। बाहुक ! इस वृक्ष में जितने फल और पत्ते हैं, उन सबको मैं बताता हूं। वृक्ष में लगे हुए पत्तों और फलों की संख्या से नीचे गिरे हुए पत्तों और फलों की संख्या एक सौ दो अधिक है। वृक्ष में दो हजार पिचानबे फल लगे हुए हैं और पत्तों की संख्या पांच करोड़ है। तुम चाहो तो वृक्ष को काटकर गिनती कर लो।"

बाहुक ने रथ रोककर कहा, "वृक्ष को काटकर और फलों को गिनकर ही आपकी गणना की सत्यता की जांच हो सकती है। ऐसा किए बिना आपकी बात पर विश्वास करना कठिन है। यदि वार्ष्णेय दो घड़ी घोड़ों की लगाम संभाले रखे, तो मैं फलों को गिन लूंगा।"

राजा ने कहा, "बाहुक ! यह समय रुकने का नहीं है।"

बाहुक बोला, "मैं गिनने में ज्यादा देर नहीं लगाऊंगा। यदि आपको बहुत जल्दी है तो वार्ष्णेय को सारथी बनाकर चले जाइए।"

तब राजा ने उसे मनाते हुए कहा, "तुम्हीं मुझे विदर्भ पहुंचा सकते हो। वार्ष्णेय तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकता। इस काम में विघ्न मत डालो। मुझे तुम्हारा ही भरोसा है।"

बाहुक ने कहा, "मैं बहेड़े के फलों को गिनकर ही यहां से चलूंगा। आप मेरी बात मान लीजिए।"

राजा ने अनमने होकर कहा, "अच्छा, गिन लो।"

बाहुक ने वृक्ष को तुरन्त काट डाला और फल गिने तो वे उतने ही निकले, जितने राजा ने बताए थे।

अब बाहुक ने राजा से कहा, "महाराज! गणित विद्या में आपकी निपुणता आश्चर्यजनक है। इस विद्या का रहस्य मुझे भी बताने की कृपा करें।"

राजा ने कहा, "बाहुक! जुए के खेल में और गणित में तुम मुझे अत्यन्त निपुण समझो।"

बाहुक ने कहा, "राजन्! आप यह विद्या मुझे बता दीजिए और बदले में मुझसे अश्व-विद्या सीख लीजिए।"

राजा ने यह बात मान ली। फिर कहा, "तुम मुझसे इसी समय जुआ खेलने की विद्या ग्रहण कर लो। अश्व-विद्या मैं तुमसे फिर सीख लूंगा।"

ज्यों ही बाहुक बने नल ने जुए की विद्या सीख ली, कलि उसके शरीर से बाहर निकल गया। कलि की कर्कोटक नाग के विष की जलन और दमयन्ती के शाप की आग भी शान्त हो गई और कलि ने अपने वास्तविक स्वरूप को प्रकट किया। कलि के निकलने से नल की बुद्धि भी निर्मल हो गई। कलि को देखकर राजा नल उसे शाप देने लगे।

यह देख कलि भय से कांपता हुआ, हाथ जोड़कर उनसे बोला, "राजन्! अपने क्रोध को रोकिए। मैं आपके यश का विस्तार करूंगा। आपकी सती-साध्वी पत्नी के शाप और कर्कोटक नाग के विष के प्रभाव से मैंने भी घोर कष्ट भोगा है। मुझे भारी दण्ड मिल चुका है। यदि आप इस समय मुझे क्षमा कर दें, तो मैं आपको वरदान देता हूं कि जो कोई आपका नाम लेगा और आपके चरित्र का गुण-गान करेगा, उस पर मेरा बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा।"

कलि के विनय वचनों से नल का क्रोध शान्त हो गया। वह

तुरन्त उस बहेड़े के वृक्ष में घुस गया।

जिस समय कलि और नल में ये बातें हो रही थीं, दूसरों को कलि दिखाई नहीं दे रहा था। कलि के अदृश्य हो जाने पर राजा नल की सारी चिन्ताएं दूर हो गईं। वे उन वेगशाली घोड़ों को हांकते हुए विदर्भ की ओर बढ़ चले!

क्योंकि कलि बहेड़े के वृक्ष में प्रविष्ट हो गया था, इसलिए वह निन्दित माना जाने लगा।

सांझ के समय राजा ऋतुपर्ण का रथ विदर्भ जा पहुंचा। राजकर्मचारियों के ऋतुपर्ण आगमन की सूचना राजा भीम को दी।

राजा ऋतुपर्ण के आगमन से दमयन्ती ने मन-ही-मन सोचा, 'संभवतः मेरी योजना सफल हुई है और महाराज नल ही रथ को हांककर लाए हैं। 'यदि मैं आज नल को नहीं देखूंगी तो जीवित नहीं बचूंगी।'

दमयन्ती सड़क से लगे महल की छत पर चढ़ गई, जिससे नल को देख सके।

बाहुक ने यथास्थान रथ को रोका और वह तथा वार्ष्णेय रथ से उतर पड़े। राजा ऋतुपर्ण भी रथ से उतर गए।

राजा भीम ने उनका खूब आदर-सत्कार किया और उन्हें राजभवन की अतिथिशाला में ठहरा दिया। परन्तु राजा भीम यह नहीं समझ सका कि राजा ऋतुपर्ण यहां किसलिए आए हैं। राजा ऋतुपर्ण ने भी देखा कि यहां स्वयंवर की तो कोई तैयारी है ही नहीं। दूसरे राजा-राजकुमार भी यहां कोई नहीं हैं। दोनों राजाओं की समझ में कुछ नहीं आया कि क्या मामला है।

विदर्भराज भीम ने राजा ऋतुपर्ण से कुशल-मंगल सम्बन्धी

प्रश्न पूछने के बाद पधारने का कारण पूछा, तो राजा ऋतुपर्ण बात टाल गए और बोले, "मैं आपका दर्शन और अभिवादन करने के लिए आया हूं।"

राजा भीम को बात जंची नहीं पर कहते क्या ! थोड़ी देर बातचीत के बाद राजा ऋतुपर्ण विश्राम करने चले गए।

उधर बाहुक घोड़ों को खोलकर, उनकी थकान दूर करने तथा भूख-प्यास दूर करने की व्यवस्था करके रथ के पिछले भाग में जा बैठा।

जब से कर्कोटक नाग ने नल कोकाटा था, उसका रंग काला हो गया था। इसलिए दमयन्ती दूर से उसे पहचान नहीं सकी। वह सोचने लगी—'महाराज नल का सारथी वार्ष्णेय भी अच्छा सारथी है। हो सकता है, वही इस रथ को वेग से हांक लाया हो। या हो सकता है, राजा ऋतुपर्ण स्वयं भी महाराज नल की तरह अश्व-विद्या के जानकार हों।'

अंत में उसने अपनी दासी को बाहुक के पास भेजा ताकि उससे बातचीत करके वह सच्ची बात का पता लगा लाए। इस दासी का नाम केशिनी था।

दमयन्ती ने उसे अच्छी तरह समझा-बूझाकर भेजा। उसने कहा कि वह पर्णाद ब्राह्मण वाली बात उसे बताए।

केशिनी ने बाहुक के पास जाकर पूछा, "बाहुक ! यह वार्ष्णेय राजा नल का सारथी था। क्या इसने, 'महाराज नल कहां चले गए हैं,' इस सम्बन्ध में आपको कोई बात बताई है ?"

बाहुक बोला, "यह बेचारा नल के बारे में कुछ नहीं जानता। राजा नल का रूप ही बदल गया है। वे गुप्त रूप से रहते हैं। नल के सम्बन्ध में परमात्मा के सिवा कोई कुछ नहीं जानता।"

केशिनी बोली, "बाहुक ! राजा भीम के भेजे हुए पर्णाद

ब्राह्मण से दमयन्ती की दशा का वर्णन जब आपने सुना था, तो उन बातों का कुछ उत्तर आपने दिया था। साध्वी दमयन्ती उन्हीं बातों को दोबारा आपके मुंह से सुनना चाहती हैं।"

केशिनी की यह बात सुनकर नल की रुलाई फूट पड़ी। नल ने वे सारी बातें दोबारा कह सुनाईं, जो अयोध्या में पर्णाद ब्राह्मण से कही थीं।

उन बातों को दोहराते समय नल फूट-फूटकर रोने लगा। केशिनी ने सारी बातें दमयन्ती को बता दीं।

अब तो दमयन्ती का सन्देह पक्का हो गया। उसने केशिनी से कहा, "तुम फिर जाओ और बाहुक पर नजर रखो। उसके प्रत्येक कार्य को बारीकी से देखो। यदि वह आग या पानी मांगे तो मत देना। बात को किसी तरह टाल देना। यदि उसमें तुम्हें कोई अद्‌भुत बात दिखाई दे तो मुझे बताना।"

केशिनी दोबारा गई और कुछ देर सब कुछ देखती रही। फिर लौटकर दमयन्ती से बोली, "यह बाहुक तो दुनिया से निराला ही है। वह किसी छोटे-से-छोटे दरवाजे में भी घुसने लगे तो सिर नहीं झुकाता है। उस दरवाजे के पास पहुंचने पर दरवाजा ही ऊंचा हो जाता है।

"राजा ऋतुपर्ण के लिए महाराज ने भोजन-सामग्री भिजवाई थी। वहां रखे पानी के घड़े खाली थे। परन्तु बाहुक के देखते ही वे पानी से भर गए। खाने की चीजों को धोकर बाहुक ने पकाने की तैयारी की। उसके देखने मात्र से ही ईंधन में आग पैदा हो गई। एक और भी आश्चर्य की बात मैंने देखी। आग को स्पर्श करने पर भी बाहुक का हाथ जलता नहीं है। बाहुक के मसलने पर फूल कुम्हलाते नहीं, और अधिक खिलने लगते हैं। इतनी सारी आश्चर्यजनक बातें मैं अपनी आंखों से देखकर आई हूं।"

अब तो दमयन्ती का सन्देह निश्चय में बदल गया। वह जान गई कि बाहुक के वेश में ये राजा नल ही हैं।

दमयन्ती ने केशिनी को एक बार फिर वहां जाने के लिए कहा और बताया कि किसी तरह उसकी बनाई हुई रसोई में से कोई चीज उठा लाओ।

केशिनी ने यह कार्य भी कर दिया। उस भोजन को चखकर दमयन्ती का विश्वास और भी पक्का हो गया।

इस बार दमयन्ती ने अपने पुत्र और पुत्री को केशिनी के साथ बाहुक के पास भेजा। नल ने उन दोनों को पहचान लिया और दौड़कर दोनों को छाती से लगा लिया। फिर वह केशिनी से बोला, "भद्रे! मेरे भी इतने ही बड़े दो बच्चे हैं। इन्हें देख, मुझे उनकी याद आ गई। इसलिए आंखों से ये आंसू बह रहे हैं।

"और सुनो, तुम बार-बार यहां आ रही हो। कोई देखेगा तो पता नहीं क्या सोचेगा। इसलिए तुम महलमें चली जाओ।"

केशिनी ने फिर सारी बातें दमयन्ती को बताईं। अब दमयन्ती ने केशिनी को अपनी मां के पास भेजा और कहलवाया, "मुझे इस बाहुक के ही नल होने का सन्देह था। मैं बार-बार परीक्षा करके देख चुकी हूं। अब एक बात शेष रह गई है कि इसका रंग-रूप नल जैसा क्यों नहीं है। इसका पता लगाने के लिए मैं स्वयं वहां जाना चाहती हूं। आप या तो बाहुक को यहां बुलाने की व्यवस्था करें या मुझे वहां जाने की अनुमति दें।"

रानी ने विदर्भराज को सारी बातें बताकर दमयन्ती को आज्ञा दिला दी। दमयन्ती न नल को अपनें भवन में बुलाया। दमयन्ती को देखते ही राजा नल आंसुओं की धारा बहाने लगा। दमयन्ती के धैर्य का बांध भी टूट गया। वह भी रोने लगी। रोते-रोते दमयन्ती बोली—"बाहुक! क्या तुम महाराज नल के सिवा किसी दूसरे ऐसे धर्मात्मा पुरुष को जानते हो जो जंगल में

सोई अपनी पत्नी को छोड़कर चला गया हो। मैंने स्वयंवर में देवताओं को छोड़कर उनका वरण किया था। मैंने कभी भी उनकी किसी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया। मैं सन्तानवती भी हूं। फिर भी वे मुझे उस दशा में छोड़कर चले गए। उन्होंने अग्नि को साक्षी करके जो प्रतिज्ञा की थी, उसे कैसे भूल गए।"

दमयन्ती जब ये बातें कह रही थी नल की आंखों से गरम-गरम आंसुओं की धारा बह रही थी।

नल ने कहा, "शोभने! वह सब कलि की करतूत थी। उसके प्रभाव से मेरी बुद्धि मलिन हो गई थी। अब मैं उसके प्रभाव से छूट चुका हूं। अब हमारे दुःखों का अन्त होने वाला है। मैं तुम्हारे लिए यहां आया हूं। तुम मुझे छोड़कर दूसरे पति का वरण करने को कैसे तैयार हो गई हो? मैं तुम्हारा भक्त और एक पत्नीव्रती हूं। फिर भी तुम यह क्या कर रही हो? तुम्हारे स्वयंवर का निमंत्रण पाकर ही तो राजा ऋतुपर्ण यहां आए हैं।"

नल के मन में मेरे प्रति सन्देह उत्पन्न हो गया है, यह जानकर दमयन्ती का हृदय कांप उठा और हाथ जोड़कर बोली, "आप दूसरे स्वयंवर की जिस बात को लेकर मुझ पर सन्देह कर रहे हैं, वह बात तो आप को यहां बुलाने के लिए झूठ-मूठ कही गई थी। क्या आपको यहां स्वयंवर की तैयारी दिख रही है? यहां आपके आश्रयदाता ऋतुपर्ण के अतिरिक्त कोई राजा या राजकुमार उपस्थित दिखाई दे रहा है? यदि नहीं तो फिर यह सन्देह व्यर्थ है। पिता के भेजे हुए पर्णाद ब्राह्मण ने अयोध्या में जो गाथा गाई, उसके उत्तर में आपने कुछ बातें कहीं, उससे मुझे लगा कि आप वहाँ रह रहे हैं। इसलिए आपको बुलाने के लिए मैंने यह उपाय किया था। स्वयंवर की बात का तो पिता जी तक को पता नहीं है। मैं आपके चरण छूकर सौगन्ध खाती हूं

कि मैंने कभी स्वप्न में भी परपुरुष का चिन्तन नहीं किया है।"

नल को जब अयोध्या में राजा ऋतुपर्ण ने दमयन्ती के स्वयंवर में चलने को कहा था, तब भी नल के मन में यह बात आई थी कि हो सकता है, दमयन्ती ने मुझे बुलाने के लिए यह उपाय सोचा हो।

दमयन्ती के स्पष्टीकरण से नल का मन उसके प्रति निर्मल हो गया।

अब नल ने मन में कर्कोटक नाग का स्मरण किया और उसके दिए हुए दोनों वस्त्र पहन लिए। ऐसा करते ही नल को पहले जैसा गौर वर्ण और सुन्दर रूप पुनः प्राप्त हो गया।

तीन वर्ष बाद पति को वास्तविक रूप में सामने पाकर सती साध्वी दमयन्ती उसे हृदय से लगाकर रोने लगी। दोनों बहुत देर एक-दूसरे को हृदय से लगाकर रोते रहे, शोक और वियोग से दग्ध हृदयों को शीतल करते रहे। दोनों बच्चे भी वहां आ गए थे। नल उन्हें गोद में लेकर बड़ी देर तक प्यार करता रहा।

दमयन्ती ने अपनी माता को सब बातें बताईं। रानी ने राजा भीम को शुभ समाचार सुनाया।

उस रात नल और दमयन्ती एक-दूसरे को बिछुड़ने के बाद की घटनाएं सुनाते रहे और दुःखों की याद करके रोते रहे।

दूसरे दिन नहा-धोकर और वस्त्राभूषणों से अलंकृत होकर नल और दमयन्ती विदर्भ राज भीम से मिलने चले। दोनों ने राजा भीम की वन्दना की। राजा भीम ने पुत्र की तरह नल को अपनाया और मंगलमय आशीष दी।

नल को आया देखकर विदर्भ की राजधानी में हर्ष और उल्लास की लहर दौड़ गई। राजा की आज्ञा से कुण्डिनपुर नगर को सजाया गया। सड़कों को साफ कर, पानी का छिड़काव किया गया। फूलों से सजावट की गई। नगर-वासियों ने भी

अपने-अपने घरों के द्वारों पर सजावट की। देव-मन्दिरों में भी सजावट और विशेष पूजा की गई।

राजा ऋतुपर्ण को जब पता लगा कि मेरे पास बाहुक नाम से सारथी का कार्य करने वाला व्यक्ति ही नल था, तो उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने राजा नल को बुलाकर उनसे क्षमा मांगी। फिर बोले, "निषध नरेश नल ! यह बड़े सौभाग्य की बात है कि आप वर्षों बाद अपनी बिछुड़ी हुई पत्नी से मिले। आप मेरे यहां जब अश्वशाला के अध्यक्ष थे, तब मुझसे जाने-अनजाने यदि कोई अपराध हुआ हो तो उसे क्षमा कर दें।"

नल ने कहा, "आपके यहां मैं बड़े मजे से रहा। आप हमारे पुराने मित्र और सम्बन्धी हैं। भविष्य में भी आपका प्रेम हमें मिलना चाहिए। मैंने आपको अश्वविद्या सिखाने का वचन दिया था। आज आप उसे भी सीख लें।"

यह कहकर नल ने शास्त्र-विधि के अनुसार ऋतुपर्ण को सारी अश्वविद्या सिखा दी।

अब राजा ऋतुपर्ण दूसरे सारथी वार्ष्णेय को साथ लेकर अपनी राजधानी अयोध्या में लौट आए।

नल एक मास तक सुखपूर्वक कुण्डिनपुर में रहा। इसके बाद अपने ससुर राजा भीम से आज्ञा लेकर और थोड़े से सेवक साथ लेकर निषध देश को चल पड़ा।

राजा नल का रथ सोलह हाथियों द्वारा घिरा हुआ था। पचास घुड़सवार सैनिक और छः सौ पैदल सैनिक थे। वह बड़े हर्ष और उत्साह के साथ राजधानी में प्रविष्ट हुआ।

कुछ समय बाद राजा नल ने पुष्कर के पास जाकर कहा, "पुष्कर ! हम फिर से जुए की एक बाज़ी लगाएंगे। मैं बहुत-सा

धन लाया हूं। दमयन्ती तथा और जो कुछ भी मेरे पास है, मैं दांव पर लगा दूंगा। इसी तरह तुम्हें भी सारा राज्य दांव पर लगाना होगा। इस दांव के साथ हम खेल शुरू करेंगे। यदि ऐसा न करना चाहो, तो हम दोनों अपने प्राणों की ही बाजी लगाएं। मैं एक बार तुमसे हार चुका हूं और अपना सब कुछ दे चुका हूं। अब मैं दोबारा खेलना चाहता हूं, तो जुए के नियम के अनुसार तुम्हें मेरे साथ खेलना ही चाहिए। और यदि तुम पासों से जुआ खेलना न चाहो, तो आओ बाणों द्वारा युद्ध का खेल खेंले। आमने-सामने की लड़ाई कर लो। जो बचेगा, राज्य उसका। मैं तुम्हें ही चुनाव का अवसर देता हूं। बोलो, कौन-सा खेल खेलना चाहते हो।"

नल की बात सुनकर पुष्कर मुस्कराते हुए बोला, "बड़ी प्रसन्नता की बात है कि तुम दांव पर लगाने के लिए धन कमा लाए हो और दमयन्ती को भी दांव पर लगाने के लिए तैयार हो। मैं तो प्रतिदिन तुम्हारी राह देखता था। आज मेरा मनोरथ अवश्य पूरा होगा। मैंने उस समय भी तुम्हें दमयन्ती को दांव पर लगाने के लिए कहा था पर तुम टाल गए थे। आज मैं दमयन्ती को जीतकर कृतार्थ हो जाऊंगा।"

उसकी बातें सुनकर नल को क्रोध तो बहुत आया, सोचा कि अभी तलवार से इस दुष्ट का सिर काट दें। परन्तु क्रोध को रोककर वे हंसते हुए बोले, "पुष्कर ! तुम व्यर्थ ही गाल बजा रहे हो। खेल प्रारंभ करो।"

पहली ही बाजी में नल ने पुष्कर को हरा दिया। पुष्कर ने अपने प्राणों तक की बाजी लगा दी थी।

पुष्कर को हरा कर नल ने कहा, "नीच ! अब यह सारा राज्य मेरे अधिकार में है। साध्वी दमयन्ती की ओर तू आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। आज से तू सपरिवार उसका दास

हो गया। पहली बार जो तुमने मुझे हरा दिया था, उसमें तेरी चातुरी नहीं, वह कलि की करतूत थी। मैं तुझे प्राणों की भिक्षा देता हूं। तू यहां से चला जा। तेरा सारा सामान और तेरे हिस्से का धन भी तुझे दिए देता हूं। तू मेरा भाई है। मैं अब भी तुझे प्रेम करता हूं।"

ऐसा कहकर नल ने उसे वहां से विदा किया।

नल की उदारता से पुष्कर बहुत प्रभावित हुआ। वह अपने परिवार, सेवकों और सेना सहित अपनी राजधानी को चला गया।

राजा नल ने नगर में प्रवेश करके नगर-निवासियों को सान्त्वना दी और वे सब भी राजा नल को पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। राज्य के मंत्री और राजकर्मचारी भी धर्मात्मा नल के पुनः राज्य संभाल लेने से बड़े प्रसन्न हुए। नगर में शान्ति छा गई। राजधानी में बड़ा उत्सव मनाया गया।

अब राजा नल अपनी विशाल सेना लेकर विदर्भ देश गए और वहां से दमयन्ती तथा बच्चों को सम्मान सहित लौटा लाए।

राजा नल पुनः न्यायपूर्वक शासन करने लगे। उन्होंने ब्रह्म-वेत्ता और शास्त्रवेत्ता ब्राह्मणों द्वारा अनेक बड़े यज्ञ कराए और खूब दान-दक्षिणा दी।

□□